

ASHA ARCHIVES

|                |   |
|----------------|---|
| 2196           | I |
| गुरुदास महाराज |   |



[illegible][illegible]



नमो विष्णु सवेदुगायकाय कं दद्यात् कवचं यथा न कृदुष्टमहात्मना ॥ २ ॥  
 यथमं लोतयती च दिगीयं वक्राया निती गुमिपं स धुद्य (धृति, कृष्णा) धृति  
 नैव युथका ॥ ३ ॥ यथमं लोतयती च दिगीयं वक्राया निती गुमिपं स धुद्य (धृति, कृष्णा) धृति  
 लजाय च न शोभनीति वा ॥ ४ ॥ नवमं कालाय च नवदुर्गे च की  
 रिता उक्ता यमानि नामानि वक्राया निती गुमिपं स धुद्य (धृति, कृष्णा) धृति

२

नमो शिवाय नमो विष्णवे नमो ब्रह्मणे नमो रुद्राय नमो ॥ ५ ॥ न  
 लया जायते किञ्चिददुष्टं न कर्तव्यं न कर्तव्यं न कर्तव्यं न कर्तव्यं न कर्तव्यं  
 कपी ॥ १ ॥ यथमं लोतयती च दिगीयं वक्राया निती गुमिपं स धुद्य (धृति, कृष्णा) धृति  
 वाचादिमहिषासना ॥ २ ॥ त्रिदिवीगजाय च नवदुर्गे च की  
 र्थनी वृषाय च कीर्त्तनी सिखिवाहना ॥ ३ ॥ दम्भादीहं समाचूषा सवोरु



चधरुषिना नानारुचधहा नानावलोयल्लारिना ॥ १० ॥ लक्ष्मीय  
 द्रासनादवी यद्रहमादभियिया स्वेतुनयाधवादवी ॥ ११ ॥ ॐ ह्यमा मानवाः सर्वे सर्वथागमसन्धिना ॥ १२ ॥ ॐ ह्यधीलेमोहानीले यद्रवालो  
 कः सर्वेऽदिद्योनायल्लविलि ॥ १३ ॥ ॐ ह्यधीलेमोहानीले यद्रवालो  
 सुल्लारुनेऽदृष्ट्यनचधमात्रा दद्यात्तावसा मा कृता ॥ १४ ॥ ॐ ह्यचचक्रं

३

गणार्धकिं हलं च सुहालायुध खनकं नाम च चैव यत्र शुद्धमवच ॥ १५ ॥  
 कृत्वा युधं च यज्ञं सा च अयुधमकर्म वा धी च मन्त्रिणं यद्रिर्मन्त्रं च  
 तथा ॥ १६ ॥ देव्यानां दहना क्षय रक्तानां गरुयाय च धावयन्त्या युधानि  
 दवा च हिनाय च ॥ १७ ॥ नमस्कृतं महावीरं महाधाय यत्रा कृत्वा महावलं  
 महाकायं महारुयविनाशिनी ॥ १८ ॥ या हि मां दवी दूष्यश्च शत्रुनी रुयव

४



द्वितीयाचार्यकुरुकोमात्री, अथवायामयिदवता ॥ १४ ॥ दक्षिणवक्रवा  
 पादोनेमत्यांखप्रधानिधीयनीयांवावृद्धीयक्र, दाययांमृगवादिही ॥ १५ ॥  
 उदीयांयक्रकोवनी, वेष्टान्यांशूलधानिधी, उर्द्ध्वद्वानीभयक्र, दधकाद्वेष ४  
 वीनथा ॥ १६ ॥ उर्वदशादि, अथवायामयिदवता, उयाममायन ४ सागु  
 विजयायागुष्टन ॥ १७ ॥ अजिमावा नयात्वेतु, दक्षिणायपचाजिमा ४

द्वितीयाचार्यकुरुकोमात्री, अथवायामयिदवता ॥ १४ ॥ दक्षिणवक्रवा  
 पादोनेमत्यांखप्रधानिधीयनीयांवावृद्धीयक्र, दाययांमृगवादिही ॥ १५ ॥  
 उदीयांयक्रकोवनी, वेष्टान्यांशूलधानिधी, उर्द्ध्वद्वानीभयक्र, दधकाद्वेष ४  
 वीनथा ॥ १६ ॥ उर्वदशादि, अथवायामयिदवता, उयाममायन ४ सागु  
 विजयायागुष्टन ॥ १७ ॥ अजिमावा नयात्वेतु, दक्षिणायपचाजिमा ४



४८७ गुरुद्वि का घांटी कां चिग्र यथा च मदा माया च ना के ॥ २३ ॥ कामा  
 का चि व के चक्र द्यनं सर्वमंगला श्री वायां रु दे काली च युष्ट वं धनू देवी  
 ॥ २४ ॥ नील ग्रीवा वहिः कल नलिकां नल कुं व नी रक्ता धात्री धरा ॥ २५ ॥  
 कं धी वा दूम वक्र धा विधी ॥ २६ ॥ हस्त या दधि नी चक्र दी विका चांगुली  
 वृष नखां गुला ध्वनी चक्र चक्रो चक्र न लेखनी ॥ २७ ॥ सुना चक्र मही

वृक्षानि त्वं उक्त उक्त हगच्छति नक्त नक्तार्थे लारं ॥ २८ ॥ विजयं सर्व कामिकं ॥ २९ ॥  
 ४३ ॥ यं यं चि नय कामं नं कं या प्राणि नि त्वं यं यं मे क्षयं मनुज या प्राणि विप्र  
 लं यमान ॥ ४४ ॥ निरुथा जाय न मृत्यु संश्रमं घय या कि न्धा विला कुरु व  
 नयं के वये ना वृत्तं यमान ॥ ४५ ॥ ४६ दं दुदया कवचं दया नाम यिदुः  
 ४७ जय (०) या न प्रथय वि संधं ध दे या चि न ॥ ४८ ॥ दवी कलार वन स्या



लो कषयनाडि नडाडि व दई ध नसा य मल मृसु विवकि न ॥ ५० ॥ नधकि  
 आधय ४ सर्व ४ ल नान विरु ट का दय ४ र व ल ३ न म वायि क र म वायि य दि  
 व ॥ ५१ ॥ अरि वा ना धि स वा धि म नु य ना धि र म ल ३ र य ला खे य ला ल्ये व कू  
 ल जा श्रय द धि का ॥ ५२ ॥ स र जा कू ल ग ना ला दा कि नी सा कि नी स थ म  
 न नी कू च वा पा ना ता कि न्य ध म दा व ला ॥ ५३ ॥ ग र र व यि धा वा ध य क ग

सा दा स्र धा न मा सु न ॥ १ ॥ म धु के ट र वि दा वि वि धा वि व न द न म ३ ॥ रू  
 य न्द हि ऊ य न्द हि य ल्हा द हि दि धा ऊ हि ॥ २ ॥ म हि वा सु च नि नी धी धु र  
 सु च नि सु द नी ॥ रू य न्द हि ऊ य न्द हि य ल्हा द हि दि धा ऊ हि ॥ ३ ॥ च क वी ऊ  
 व धे द वि रं ठ मं ठ वि ना धि नी ॥ रू य न्द हि ऊ य न्द हि य ल्हा द हि दि धा ऊ हि ॥  
 ॥ ४ ॥ मं र ल्ये व नि धु र थ धू मा क ल्ये व मा द दि नी ॥ रू य न्द हि ऊ य न्द हि



यत्नदद्विषा ऊदि ॥ ३ ॥ वद्विषुलदविदविमोराग्रदायिनी ॥ नूय  
 न्दद्विषुलदद्विषा ऊदि ॥ ३ ॥ अविंयपुययविन सर्वेषां  
 विनाशिनी ॥ ४ ॥ ननयः सर्वदा रक्षा रंठिक दुविनायद ॥ नूयन्दि १०  
 ऊयन्दि यत्नदद्विषा ऊदि ॥ ५ ॥ सुवक्षारुकि पूर्ववी रंठिक द्या  
 धिनाशिनी नूयन्दि ऊयन्दि यत्नदद्विषा ऊदि ॥ ६ ॥ रंठिक सनन  
 नूयन्दि ऊयन्दि यत्नदद्विषा ऊदि

यत्नमर्चयनी हरुकि न ॥ नूयन्दि ऊयन्दि यत्नदद्विषा ऊदि ॥  
 दद्विषोराग्रमागमं दद्विषवीयनं सुर्व ॥ नूयन्दि ऊयन्दि यत्नदद्वि  
 द्विषा ऊदि ॥ ११ ॥ विधद्विषमां नागं विधद्विषलमुर्वके ॥ नूयन्दि ऊ  
 यन्दि यत्नदद्विषा ऊदि ॥ १२ ॥ विधद्विषद्वि कल्याणं विधद्विषु  
 लां द्विष ॥ नूयन्दि ऊयन्दि यत्नदद्विषा ऊदि ॥ १३ ॥ सुना सुन द्विषा



五

वत्तनियुक्तवन्धविक॥ वृष्यद्विजयन्द्विष्यत्तद्विद्विषाज्जहि॥ ७  
४॥ प्रच्युतदेह्यद्विष्यत्तद्विद्विषाज्जहि॥ वृष्यद्विजयन्द्विष्यत्तद्विद्विषाज्जहि॥ ७  
५॥ विद्यावन्धविक॥ वृष्यद्विजयन्द्विष्यत्तद्विद्विषाज्जहि॥ ७  
६॥ वृष्यद्विजयन्द्विष्यत्तद्विद्विषाज्जहि॥ ७  
७॥ वृष्यद्विजयन्द्विष्यत्तद्विद्विषाज्जहि॥ ७  
८॥ वृष्यद्विजयन्द्विष्यत्तद्विद्विषाज्जहि॥ ७

स्वस्त्यस्तु सर्वदा विक ॥ नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ १४ ॥  
 हिमात्तयस्तु नानार्थवर्दिनस्तु दशपुत्रि ॥ नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादि  
 दिदिवा ऊहि ॥ १५ ॥ नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ १६ ॥  
 नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ १७ ॥ नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ १८ ॥  
 नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ १९ ॥ नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ २० ॥  
 नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ २१ ॥ नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ २२ ॥  
 नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ २३ ॥ नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ २४ ॥  
 नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ २५ ॥ नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ २६ ॥  
 नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ २७ ॥ नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ २८ ॥  
 नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ २९ ॥ नृपयन्त्रिजयन्त्रिहियत्तदादिदिवा ऊहि ॥ ३० ॥



ऊनादानमस्तु नन्वा यथा विक ॥ नृप च हि ऊय च हि य आ दक्षि षष्ठा ऊदि  
 ॥ २२ ॥ यत्नीमना नमा न्द हि सना वृत्तानु साविर्णी ॥ नाविर्णी दुर्ज संसा नसा  
 गवसा कुला कुर्या ॥ २३ ॥ ॐ दंस्तु यति त्वानु महासा वय (० नन ४ ॥ १२  
 सयस्य फल न सख्यं वनमा प्राप्ति संयद ॥ २४ ॥ दृष्टु मी लास्तु स मायं  
 फ ॥ ६० ॥ ३ ॥ ॐ नमो भक्ति कारे ॥ विष्णु देवान न द ह्यय विद दी दि वा व कु य ॥

धृयः प्रा फलि मिता यमः सा मा यधा वि (६) ॥ १ ॥ सर्वे भ गदिना यस्तु मं  
 वाक्षमयि की लक ॥ सायि क्रम म वा प्रा किं नि सत नं जा य नत्य न ॥ २ ॥  
 सिद्ध नुच्चा टना दी नि वस्तु नि सक ला न्ययि ॥ ३ ॥ न नस्तु वना न्द वि स्का व  
 वृ न्त न सि द्धानि ॥ ३ ॥ न न न नो सध न न न किंचि द वक्षि ष्य न ॥ वि न न सि  
 द्धान सम्यक् सर्वे मुच्चा टना दि कं ॥ ४ ॥ समस्त प्रयि स्या त्य कि ला क सं का



सिमां हन ॥ कृत्वानि संवयासास सर्वे भवमिदं शुभं ॥ ३ ॥ सावर्धे चोक्तं का  
यास्तु नञ्च गुह्यं च का नमः ॥ समाकोर्य सुयुध्यत नान्यथा वन्निर्मिष्टं ॥  
३ ॥ सायिक्रममवापानि सर्वे भवनसंघायः ॥ कृष्णाय वाचतुर्दश्यां सक  
स्यां वा समाहितः ॥ १ ॥ दद्यान्नियतिगृहं दद्यान्नान्यथेवायसिद्धिनि ॥ ४०  
थं च यद्यकीलनमदादवनकीलितं ॥ ५ ॥ यानिः कीर्त्तयिष्ये नानिर्त्यज

यनि संसृष्टं ॥ ससिद्धः सगद्यः सायि गंधर्वो जायत वन ॥ ६ ॥ नञ्च वाच्यं  
नमस्त्यस्य क्रापिहि जायते ॥ नाल्यमृष्टा वेष्टा यानि नृनं सा क्रमवापुः  
या नृ कृत्वा याचय कुर्वीत अकुर्वीत विनश्यति ॥ नना कृत्वेद संयत्ता  
मिदं याचय न वुधेः ॥ ११ ॥ सायि ग्यादिचय न किंचिद्दृष्ट्यनलत ना ऊन  
नेः ॥ न सर्वं त्वत्सादन नन जायमिदं शुभं ॥ १२ ॥ धनं सुकृत्वा मानसी



न स्तोत्रं संयत्तिरूचकैः ॥ रुद्रस्य च समग्रं भाष्यं न नः प्रवक्ष्यमवतत ॥ १३ ॥  
नेष्टुर्गुणैः साधनं सोऽग्रा ग्रा वाग्यसंयदाः ॥ इत्युक्तं नित्यं भाष्यः स्तुत्यभिः  
ज्ञानकिं ऊनेः ॥ १४ ॥ वरुणिकाह दशनायि यः स भक्तमननं नः ॥ स्मृत्वा क  
मानवा प्राप्तिं हृदि दद्यात् सदा विष्णुः ॥ १५ ॥ अग्रमा ऊ मदा दत्वा कृत्वा  
कीर्तिनका च धनं ॥ निःकीर्तं यथा कृत्वा यथैव वा समाहि नः ॥ १६ ॥

यथमं यथ न दद्यात् कृत्वा चैव धुरं रुद्रं ॥ धुविदिवा मदारु स्तोत्रं नरीषु  
रुतं ललरुतं ॥ १७ ॥ इति श्री रुद्रावताः कीलकं समाप्तं ॥ ॥ ॥ नयस्य न  
महात्मानं मोक्षं कथामहा मुनिं ॥ वासुदेवाय दत्तान् ऊ मदिः यविष्टु च नि  
॥ १ ॥ अस्य सफ सविका माला मं वस्य ॥ धीवक्रा मवि ॥ अनुष्टुपु च्छया ॥ धीः  
महा काली देवता ॥ यक वं मिका वीज ॥ अग्नि न त्वं ॥ नमस्वी च्छि न का मना सि ॥



कार्थ॥ कवचपाठमहं कवि शानि॥ अथ सकलदुष्कृतनिवृत्तदुष्कृता  
थ॥ समस्तपदवदितवदाविशरुवनसुविशगवाहित॥ दस्युवाजुशक्त  
नलमाथादवश्यः॥ सर्वदारायारावसर्ववाधविनिम्मुक्तः॥ धनधात्रसुता  
चिन्तः कामीमार्कंडेयपुत्राक्षः॥ सफसनि कायाठमहं कवि शानि॥  
अथ सकलनिःप्रायवविग्रस्य॥ वक्राक्षवि॥ गायत्री छन्दो॥ नन्दयाक्षकि

१५

॥ चक्रदीपिकावीजं॥ महाकालीदेवना॥ अग्निगत्वं॥ मया सकलालीष्ट  
रुलपाफिकामनाथेष्टीदुर्जयीत्यथैकयया॥ विनिशानि॥ ४॥ मन्त्रचवि  
ग्रस्य॥ विष्णुअवि॥ अनुष्टुपुछन्दो॥ महालक्ष्मीदेवना॥ ॥ कंठगीष्टकिं॥ दु  
र्जवीजं॥ वायुनत्वं॥ मया सकलालीष्टरुलपाफिकामनाथेष्टीदुर्जयीत्य  
थैकयया॥ विनिशानि॥ ४॥ उक्तचविग्रस्य॥ रूद्रअवि॥ अनुष्टुपुछन्दो॥ महा



सप्तस्वमीदवता ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

स्वाध्यायनिषेधकप्रयत्नेष्वेव वंशसमुद्रवः ॥ सुवर्धनामवाङ्मयसमस्त  
 क्रिनिर्गुल ॥ ३ ॥ नस्ययत्नयनसमस्त कुञ्जयुगानिवीचसान् ॥ वरुव  
 ॥ ४ ॥ नस्ययत्नयनसमस्त कुञ्जयुगानिवीचसान् ॥ वरुव  
 ॥ ५ ॥ नस्ययत्नयनसमस्त कुञ्जयुगानिवीचसान् ॥ वरुव  
 ॥ ६ ॥ नस्ययत्नयनसमस्त कुञ्जयुगानिवीचसान् ॥ वरुव  
 ॥ ७ ॥ नस्ययत्नयनसमस्त कुञ्जयुगानिवीचसान् ॥ वरुव



॥३॥ अमाखेवलिरिदुष्टे दुष्टेन स्य दुःखमस्ति ॥ कोषावलं वायु  
 नं, न जायिष्य युव नमः ॥ १॥ नमः सुगोया वा ऊन हे नः स्वामाः मरुयनि  
 ॥ २॥ का कीरुयमात्रस्य ऊनामगहनं वनं ॥ सनवाद्यममदाक्रीडि ऊनग्नौ १॥  
 स्यमधमः ॥ ३॥ अष्टा नष्टायदा कीर्तं मुनिनिषेधायेष्टमस्ति नं ॥ ४॥ नष्टे कंवि  
 त्सकालं च मनिना न नस्तु नः ॥ ५॥ दनश्च नश्च विन नं स्मिन्मुनिवनाद्यमे

॥ १०॥ सायिकयलु दानय ममला रुष्टयन नः ॥ मत्युर्वेः यालि नं यूव म  
 यादीनं युवंहि नन ॥ १२॥ मरु ले के वमदृ ले द्यमतः याल्यन ले वा ॥ नः  
 जानस्य धाना म धूवह स्त्री सदा म नः ॥ १३॥ ममवे विवहां जानः कानन  
 गानुयल स्य न ॥ यममानुग नानि लं यसादधन ऊऊ नः ॥ १४॥ अनुरक्तिः  
 ध्रुवं नद्य कुर्वे न्यन मदीरु गां ॥ १५॥ सस्य ग्यां धी ले केः कुर्वे क्रिः ॥ १६॥ न नं वा



यं॥ संचिन्तः सा नि दुःखेन कृय कोषागमिष्यति॥ १३॥ न न आन च स  
 न न शि क यामा स या धि वः॥ न न विषा समा स्या म वेष्म म कंद दक्षे सं॥ १४॥  
 सृष्ट क न क र्त्त री ह नु श्च ग म न न कः॥ स (६) क ४४ व क स्या त्वं दु म्म द  
 ४४ व ल क र्त्त री॥ १५॥ ४४ त्या क र्त्त व र क स्या रू य नः प्र द या दि न॥ य स्यु वा य सः  
 न वेष्म श्रु द या व न नृ यं॥ १६॥ वेष्म ड वा च॥ समा धि न्ना म वे (६) हं सु त्य

त्यं न्ना ध नि नां कु ल॥ यु व दा र्थे नि व र्त्त थ ध न ली ला द क्षा धु रिः॥ १७॥  
 वि ह्री न श्र ध ने द्वा र्थे यु क्ते वा दा य न ध र्त्त॥ व न म र्था गे ना दुःखी नि व र्त्त थः  
 दू र्ध धु रिः॥ २०॥ सा हं न व द्धि यु वा द्वा कु ष ला कु ष ला मि कां प्र द र्शि  
 स्व ऊ ना ना श्र दा वा द्वा च न रं मि न द्वा॥ २१॥ किं नु न र्मां गृ ह कृ म म क  
 र्त्त किं नु र्मां य र्त्त॥ क र्थ न किं नु स ह ला दु वृ ला किं नु म सु ना॥ २२॥ याः



**आवाच॥** ये निवक्ता र वानलुब्धेः युवदा नादिरिद्धे न ध्या ॥ सुकिं रुव  
 नः स्तुह मनुवक्षानि मानसं ॥ १३ ॥ **वेष्टा उवाच॥** वयमगद्यथा पादु  
 वानस्माद्ग न वय ॥ किं कथामि न वक्षानि ममंष्टु वनां मन ॥ १४ ॥ येऽहं न्य अ  
 यिगृह्णह धनलुब्धे निवाह नः ॥ यतिस्व ज न हा दैश्च हादि नैश्च वल्लभ मन ॥  
**१५ ॥** किमगन्ना रि ज्ञाना मि ज्ञान न्नायि म हाम न ॥ न यन्प्रमं वरं चिह्नं वि

गुह्यं ययि वंधु ॥ १६ ॥ नवां क न भनिः क्षमा दोर्मनस्य अजाय न ॥  
 कथामि किं यन्न मन सुयुधी निबुनिष्ठु न ॥ **मा कैः य उवाच॥** न न स्त्री  
 साहि नो विष नं मुनिं समुपस्थि नो ॥ समाधिर्नाम वेष्टो सो सययाथि वः  
 सक न ॥ १७ ॥ कृत्वा तु नो यथा न्यायं यथा हं न न स विदं ॥ उय विष्टे काः  
 थाः काश्चि च क गुर्वेष्टयाथि व ॥ १८ ॥ **वा ऊवाच॥** रुग वंस्तान हं यष्टु



मिच्छामकं वदस्व ननु ॥ दुःखाय ऊन्ममनसः स्थितिरायक मां देव ॥ म  
मत्वं मम राक्षसा नो र्भोगाविलस्यति ॥ ज्ञानमो यियध कृसा विभन  
मुनिमरु म ॥ ३१ ॥ अयं यनि कृ नः युने दो न रुत्ये म थो किनेः ॥ स्व इ  
नन ग्रसं एक कषुदा दीने था यानि ॥ ३२ ॥ एवमयमथा दं च दा वयन  
न दृशिये नो ॥ इष्ट दा धिय विषय ममत्वा कृष्टमानसो ॥ ३३ ॥ न किने न मदा

रागद्वय सा लोहा निना र्वाय ॥ ममा सच रव रु मां विव कां ध स्य मु रु न ॥  
अपि चू वा वा ॥ ज्ञानमस्मि समरु स्य ऊन्म विमो य ला वय ॥ विषय ध मदा  
राग ज्ञानि वे वं पृथ क पृथ क ॥ ३४ ॥ दिवा न्धा ध्या धिन क वि या गार् व ध म  
आ यन ॥ रुचि दिवा ने था र्वा गो ध्या धिन रु ल्य द स्य न ॥ ३५ ॥ ज्ञानि नाम  
मुजा म स्य किं गु न न हि क व न् ॥ य गा हि रु नि नः सर्व य धु या के मु गा द



यः॥३०॥ ह्यनश्चननुयाहं यकृतामृगयक्रिहं॥मनुष्याहं च यत्न  
 मां कुल्यमन्यकृथा रुथा॥३६॥ ह्यनयिसमिधयध्वेमानयनगान्मावच  
 चुषु॥कदमाक्रान्दतामादानयीशमानानयिकुधा॥३६॥मानुषाः २१  
 मनुजव्याधुःसारिलायाःसुगानेयनि॥लाह्यसुयकाचायनचेनेकि  
 नयध्वनि॥नथायिममतावकृमादागकृनिदानिना॥महासायाय

रावनसंसायक्रिनि॥काविहः॥४१॥नन्नाग्रविष्णुयःकार्यथागनि  
 दांजगत्यनः॥महासोमोहयश्चेमातयासंसाह्यनऊन॥४२॥ह्यनिना  
 मायिधर्मासिदवीरुगवनीति॥वलादाह्यभाह्येमहासायायय  
 दनि॥४३॥यतयाविमृशनेविष्णुजगदनश्चचायव॥मेवायसन्नावन  
 दानृधंरुवनिमुकाथ॥४४॥साविद्यायवमामुकेहृदुरागमनातनी॥



संसात्रवंधरुनुधु सेव सर्वेष्वप्यध्वनी ॥ ४५ ॥ वाआवाच ॥ रुगवन्काः  
 हि सादवी मद्रसायनिर्यांरुवान ॥ ववीनिकथमुत्पन्ना मा कर्मास्याश्चिदं  
 दिऊ ॥ ४६ ॥ यत्स्वरुवाच सादवी यत्स्वरुया यदुद्रुवा ॥ न सर्वेष्वप्यध्वनी २२  
 मि त्वत्प्रकाविदावेन ॥ ४७ ॥ सावित्रुवाच ॥ निर्येवसाजगन्मूर्ति कयास  
 वेमिदंनग ॥ मथापिनत्समुत्पत्तिर्वेदुधाध्वयमांसम ॥ ४८ ॥ देवानांकायः

सिद्धये सावित्रुवनि सायदा ॥ रुत्यन्ननि नदा ला क सानि त्या यरिधीयन  
 ॥ ४९ ॥ यागनिद्रायदाविष्णु ऊगल कार्धवीकृन् ॥ आसीश्वर्यसमः  
 रुऊग कल्याकरुगवान्प्रभु ॥ ५० ॥ नदाद्वावसुनी धात्री विख्यानीम  
 धुकेटली ॥ विष्णु कर्धमलो रुनी रुन्नुवकाधामुशनी ॥ ५१ ॥ सुनारि कम  
 लविष्णुः स्मितावकायजायनिः ॥ इक्ष्वाकवसुनी यात्री यमुकचजनादन



**॥५२॥** गुह्यवशागतिद्राक्ष्मकाग्रहदयस्मिन् **॥** विवाधनाथयहपह  
 विनयकृतालयी **॥५३॥ वक्रावाच ॥** दिव्येष्वर्वाङ्गदार्वास्मिन्मि  
 हावकाविही **॥** स्मोमिनिद्राङ्गवर्मा विष्कापगुलनञ्जस **॥५४॥** त्वंस्वा  
 हातृस्यधर्वाहिवेवक्रावस्यनात्मिका **॥** मुधात्वमक्रयनिरे विधमाया  
 मिकास्मिन् **॥५५॥** अद्रमाग्रास्मिन्निद्यायानुच्चार्याविष्ठास्यन **॥५॥**

२३

नी  
**॥५॥** त्वमवसातंसावित्री त्वंदवीजनयना **॥** त्वंयेनद्वार्येनविष्णुं त्वंयेनसु  
 क्रनेजगत **॥५६॥** त्वयेनत्याल्यनंदवि त्वमस्यक्रयसर्वदा **॥** विसृष्ट  
 सृष्टिरूपां त्वंस्मिन्निपूयाययातन **॥५७॥** नथासहनिपूयान्क जगन्मास्य  
 जगन्माय **॥** महाविद्यामहासाया महाभक्षामहास्मिन् **॥५८॥** महाभादा  
 चरुवमीमहादवीमहासुची **॥** यद्वनिस्तंयसर्वस्य गुनेग्रयविष्ठाविनी



॥३६॥ कालनादिर्महायात्रिर्मोहनादिश्च दानुषा ॥ त्वं धीस्त्वमोक्षनीस्त्वं  
 क्षीस्त्वंबुद्धिर्बोधलक्ष्मी ॥३७॥ लज्जायुष्मिस्तथागुष्मिस्त्वं क्षान्तिः कान्तिर्नवव  
 ॥ स्वप्तिनी धूलिनी धोना गदिनी चक्रिनी मथा ॥३८॥ क्षीरिनी यायिनी वाष्पिनी ॥ २४  
 रुक्षुं तीयविद्यायुधा ॥ सीमा सीमननाक्षरं सीमयस्त्वमिमुन्दवि ॥३९॥  
 ॥ यत्रा यत्रा धीयत्रमा त्वमवयवमध्वनी ॥ यत्र किंचित्कचिदस्त्वमदमदस्त्वमिमुन्दवि

त्रिक ॥३२॥ नमः सर्वस्य वाष्पिनीः सार्वार्थिकं सुयमेव दानुषा ॥ याया त्वया उगम  
 ॥ उगत्या नास्ति यत्र उगम ॥३३॥ सायिनिद्रावर्षा नीनः कस्त्वस्त्वानुमिह  
 ॥ विष्णुः क्षत्रीयग्रह मद्रमीक्षानमवच ॥३४॥ कायिनी सयना मस्त्व  
 कस्त्वानुमिह मा रुच ॥ सात्वमित्थं युरावः स्वे नृदायै द्विर्विसंस्तुता ॥३५॥  
 माहयमोदुनाधयो वसुनामधुके टक्षी ॥ यत्राधश्च उगत्वासी नीयनामचु



ननु वा ॥ ३३ ॥ बाधश्चक्रिय नामस्य हनुमन्मोमनासु ॥ अविनू वा ॥  
 उदं सुनामदादवी नामसीनवधसा ॥ ३४ ॥ विष्काः यवाधनाथाय नि  
 हनुमन्मधुकैटरी ॥ ननु स्यात्तसिकावाकु हृदयस्य सुधावसः ॥ ३५ ॥ नि २५  
 मेम्यदहननमस्ते प्रमैकनो वाक ऊननः ॥ उरु (धौ) वरुमनाथ मया  
 मुक्ता ऊनादनः ॥ ३६ ॥ प्रकाशेवहिहायना रुमः सदृशं यमी ॥ मधु

कैटरी दुनात्मानो वनिवीर्ययना कमी ॥ ३७ ॥ काधवक कनो वरुं वक्र  
 र्हाऊ निनायमी ॥ समुत्थाय नन सा र्या सुपुष्प रगवान्दवि ॥ ३८ ॥ यं वर  
 वेसह आदि वाकुपु रुवत्तविशुः ॥ कावया निवला भमी सदा मायाविभा  
 हिनी ॥ ३९ ॥ उरु वक्रो वना समुक्ता विद्यमानि नि क हाव ॥ श्रीरुगवानुवाच  
 ॥ सुवेमैका सद्य भगुक्षी मम वद्यावुरा दधि ॥ ४० ॥ कियन्ते न वधथा प्रनाव



धृष्टं नमः ॥ **अथि नृवाच ॥** वधिना र्यामि नमः दा सर्वमायामयं कुरु ॥ १५ ॥  
॥ विलाक ना र्यामि दिना रुगवाच सले कुरु ॥ **अथि नृवाच ॥** वधिना र्यामि दिना रुगवाच सले कुरु ॥  
व्यास्तं मृत्यु नावयां ॥ १६ ॥ **आवां ऊहि नय गोर्वि सवि ननय विष्णु ना ॥ अथि**  
**नृवाच ॥** नथ मृत्यु कुरु गवना र्धं ख व कुरु गदा रु ना ॥ १७ ॥ **कृत्वा च कुरु वधि**  
**नृवाच ॥** नथ मृत्यु कुरु गवना र्धं ख व कुरु गदा रु ना ॥ १८ ॥ **कृत्वा च कुरु वधि**  
नृवाच ॥ नथ मृत्यु कुरु गवना र्धं ख व कुरु गदा रु ना ॥ १९ ॥ **कृत्वा च कुरु वधि**

शव मस्या देव्याः सु रयः शृङ्खल व दानि नमः ॥ **अथि नृवाच ॥** वधिना र्यामि दिना रुगवाच सले कुरु ॥  
॥ **अथि नृवाच ॥** वधिना र्यामि दिना रुगवाच सले कुरु ॥ **अथि नृवाच ॥** वधिना र्यामि दिना रुगवाच सले कुरु ॥  
थमो र्यामि ॥ १ ॥ **अथि नृवाच ॥** देवा सुनमः सु दुर्दयै मद्य स नं वुना  
॥ महिषे सुनामः महिषे देवानां वयु नं चने ॥ २ ॥ **अथि नृवाच ॥** देवा सुनमः सु दुर्दयै मद्य स नं वुना  
नय नाजि नं जिवाच सक ला देवा नी चो रु महिषा सुनः ॥ ३ ॥ **अथि नृवाच ॥** देवा सुनमः सु दुर्दयै मद्य स नं वुना



नादेवा यद्ययोनिं ज्ञायति ॥ युजस्व स गताननु यथेष्टागपूजध्वजे ॥ ३ ॥ य  
 थावृत्तं न योनद्वन्महिषासुपवेष्टिर्न ॥ विदः कथयामासु देवास्त्रिविस्ववः  
 सूर्योऽग्न्याग्निर्लेन्दुना यमस्य वपूषास्य च ॥ अन्ये वाश्चाधिका न न स्वर्गे  
 सेवाधिनित्यनि ॥ ४ ॥ मस्य ज्योतिर्गच्छनाः सर्वे ते न देव गताः पुत्रि ॥ वि  
 चरन्ति यथा मर्त्या महिषे न दुःखात्मना ॥ ५ ॥ एतद्वः कथितं सर्वममत्र नि

२१

वि नि  
 ज्ञेष्टिर्न ॥ ६ ॥ अथ ययनाः स्मि वधस्तस्य विचिन्तनां ॥ ७ ॥ ॐ त्र्यनिहा  
 सा देवानां वरांसि मधुसूदन ॥ चक्रावकीर्णं वधुं रुष्यं कुटीकुटिलाः  
 ननी ॥ ८ ॥ गताति को वयूषसा चक्रि ॥ ९ ॥ वदना रुमं ॥ निश्चकाम मरुत  
 को वक्राः १० ॥ कनस्य च ॥ ११ ॥ अन्यमाश्चैव देवानां ॥ १२ ॥ कादीनी क्षीयन्  
 नः ॥ निर्जेतं सुमहर्षेण मन्त्रेण मम गच्छत ॥ १३ ॥ ॐ नीवन ऊसः कुं



टं कलकमिवयवेन ॥ ददधुसुनासुगु कालावाकदिगनन ॥ ११ ॥  
॥ अहं नृत्तं नृत्तं नृत्तं ॥ सर्वदेवदीनानां ॥ प्रकसं नदरुन्नात्री वाक  
नाकवृत्तं तेषां ॥ १२ ॥ यदरुहा रुवस्ति ॥ ननाकायननसुर्व ॥ यास्यः  
नवारुवर्कः ॥ वाहवावीकु नकुसा ॥ १३ ॥ सोम्यनस्तनयो युर्म सध्वं  
यधवारुवर् ॥ वाहूधोनचकुंधा नृत्तं निर्वर्कः ॥ १४ ॥ वृद्धः

कुत्तसायाधो नदंगुल्यार्कनकुसा ॥ वसुनाथकनांगुल्यः कोधन  
धरनाधिका ॥ १५ ॥ नस्यास्तुदनाः संरुना याकायननकुसा ॥ न  
चननियययः ॥ नध्यायावकनकुसा ॥ १६ ॥ कुवीयसंक्षयास्तुः  
वध्वावनिलस्य ॥ नमोऽथैवदनां सुरुवस्तु कुसाधिका ॥ १७ ॥ ननः  
मस्तुदवार्ना नकावाधिसुहुवा ॥ नोविला कनिदयायु नमनामहिषा



दिनाः॥१३॥ धूलं धूलादिनिःक्रिय ददोनस्येयिनाकधृक्॥ यक् धृद  
 कथा च कः समुत्थाद्यस्येयमः॥१४॥ धीं खं च वृत्तः धाकि ददोनस्ये  
 दुर्गामनाः॥ मावृणादरुवां ध्यायं वानेपूर्धनत्थेषुधी॥२०॥ वक्रमिच्छ २२  
 ममुत्थाद्य कुलिषादमनाधियः॥ ददोनस्ये सरुसाक्षा यंटादमेवाव  
 नाङ्गजान्॥२१॥ कालादंजाद्यमादंजं याही वां वुयमिदं ददो॥ यजाप

गिष्ठाकमालां ददोवक्रकमं तुलं॥२२॥ ससक्तमामकुयषु निजवक्त्री  
 द्विवाक्यं॥ कालश्चदकवानुरक्तं नस्याः चमोयनिर्गतं॥२३॥ क्रीना  
 दध्यामवंधान ऊमेयचनधं वय॥ वृणामधिं न थादि वां कुं तुल क दका  
 नि य॥२४॥ अर्द्धचयनथाहुर्जं कयूना सर्ववाकुषु॥ नूयुनो विमला  
 नद्विजवजकमनुकर्म॥२५॥ अगुलीजकवत्तानि समस्तारु गुलीयुः



च॥ विष्णु कर्मोदयो नमो यत्र शृंगानि निर्मलं ॥ २४ ॥ अस्मान् यत्र कत्र्या  
 विष्णुः शृंगं च दंष्ट्रान् ॥ अस्मान् यत्र कज्जं मालां विष्णुः शृंगं च दंष्ट्रान् ॥ २५ ॥  
 अदद कुरु लक्ष्मिस्तु यं कर्जं च विष्णुः शृंगं च दंष्ट्रान् ॥ २६ ॥ दिमवान् वाहनीं सिंहं च त्ना  
 निविचिधनिच ॥ २७ ॥ ददावधुन्यं सुत्रया यानया वं धनाधियः ॥ २८ ॥ अथ  
 सर्वनाम ॥ २९ ॥ महा मणि विष्णुः ॥ ३० ॥ नागहा वंदयो नमो धरुचः ॥

३०

धिवा निमां ॥ अथो यत्र सुत्रे देवी रुद्रो वायु विष्णुः ॥ ३० ॥ समानि गा  
 ननादाधेः सादृहा संमुद्रु मुद्रुः ॥ नम्यानादनधावध कुरुं यत्र विर्गनरुः  
 ॥ ३१ ॥ अमायनानि महना यत्रिहा दामहानरुः ॥ ३२ ॥ चक्रुः सकला लीका  
 रुद्रुः चक्रिये ॥ ३३ ॥ चया लवकुधुः सकलाश्च मदीधवाः ॥ ३४ ॥  
 यत्रिदवाश्च मुदा गा मयुः सिंह वाहनी ॥ ३५ ॥ गुष्टु वुर्मुनयश्चैनां रुकेनः



आत्मसूक्तं यः॥ इष्टा समस्तसंकुर्वं प्रलोका मम नावयः॥ ३४॥ सन्नद्धा  
सिलसंन्यासः समुत्सुनदायुधः॥ आदिमनदिनिकाधा दारुवातः  
हिवाहुनः॥ ३५॥ अयथावननं दधमहावेवसुनेवृत्तः॥ सददधो नगाः ३१  
दवी व्याफला कनयत्विषा॥ ३६॥ यादाका न्या नगशुर्वं किपीटा निस्त्रिगा  
वर्गा॥ अहिना हावया नाला धनुर्मानिः सन्ननर्गा॥ ३७॥ दिष्टाशुज सहस्र

क्षसमना द्या यसास्थिगां॥ ननः प्रववृत्तशुद्धं नयादद्यासु नद्विषां॥ ३८॥ हा  
काकुर्वेदुधामुक्ते नादीयितदिगंतयं॥ मदियासु ननानि शिष्टुवा क्रामल  
सुनः॥ ३९॥ युयुधवा मवश्चान्ये शत्रुवंगवता चिनः॥ यथानामयुनेः सः  
शि रूदयारवा महसुनं॥ ४०॥ अयुद्यनायु नाना शत्रुमुदामहा दनुः॥  
यश्चाश्विधनियुने वसिनामा महसुनः॥ ४१॥ अयुनानां हा नैः यश्च वीक्ष



लोयुयुधवः॥ गऊवाजिसहस्रो धेनवः केवात्रिवानिनः॥ ४२॥ वृक्षा  
 तथा नाकाद्याच युद्धमस्मिन्नयुद्धम्॥ विठालाख्यायुगानां यथा यथा हस्तिन  
 थायुगेः॥ ४३॥ युयुधसंयुगानां यथा नायात्रिवानिनः॥ अन्ययनयायु  
 गल्लं यथा नागहरीवृक्षाः॥ ४४॥ युयुधुःसंगदद्याः सहनयनहासुना  
 ॥ काटिकाटिसहस्रेषु यथानां दानिनां तथा॥ ४५॥ हयानाञ्च वृक्षायु  
 यु

३२

धर्मगारं न हि सा सुतः॥ नामत्रैरिन्द्रियालेषु हाकिरिमुष्णलेसु तथा  
 ॥ ४६॥ युयुधुःसंयुगदद्याः स्वप्नेष्वनद्युयद्विषोः॥ कचिच्च विद्रुयुः  
 हाकिः कचित्पाणी सुथायने॥ दवीरवपुःपुहानेसु न नां हर्तुं युवक्रमुः  
 ॥ सायिदवी न न स्नानि, हाक्काधक्काहिर्वाणिका॥ ४७॥ लीलयेव युयु  
 धुद निजहाक्काधक्कावविधी॥ अनायस्माननादवीर्यमाना मुवविरीः॥



**॥ ४९ ॥** मुमा वासु न देह यु धास्तु न्यस्तु निषध वा ॥ सायिकु द्यो धु न धा मा  
 दवा वा रु न के धा नी ॥ **५० ॥** यया नामु न सै न्य यु व न धिव रु ना धा व ॥ **५१ ॥**  
 निः स्वा सा मु मु य चा थ यु द्य मा ना न धा मि का ॥ **५२ ॥** य व द्यः स रू ना  
 ग धाः स न स म रू म धाः ॥ यु यु धु रु य न धु रि रि न्दि या ला सि य दि षी ॥ **५३ ॥**  
**॥** ना धा य ना सु न ग धा दे वी धा कु य रं दि नाः ॥ ल्वा द य न य ट हान् ग धा ॥

३३

॥ धां र वा रु था य न ॥ **५४ ॥** मृ दं ग ध न त्ये वा न्यो ग मि न्यु द न हा त् स वे ॥ न ना  
 द वी वि धू ले न ग द या धा कि वृ ष्टि रिः ॥ **५५ ॥** र व ज्ञा दि रि ष्य धा न धा नि रु  
 द्या न न द्वा मु नान् य न या मा स र्वा न्यो न द्यं टा स्वन वि भा दि ना न ॥ **५६ ॥**  
 ज मु नान् यु वि द्या ण न व धा न्या न क र्थे नः ॥ क चि दि धा रु ना र्की र्णी र व ज्ञ  
 या र्थे रु थो य ने ॥ **५७ ॥** वि यो धि ना नि या न न ग द या यु वि ण न न ॥ व मु ध्य



कश्चिदुधिवं सुखपदं रुतं ॥ ३१ ॥ कश्चिन्नियमिना रू मो. रिनाः ॥  
 लनवक्रसि ॥ निवक्रनाः ॥ योयेन रुतं कश्चिद्वद्विजि ॥ ३२ ॥ ॥ ॥  
 कोविदः ॥ यो ॥ नमुचुम्भि दक्षा देनाः ॥ कश्चायि द्वाहवद्विना ॥ ३३ ॥  
 रुथायन ॥ ३४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 द्यास्त्ययन ॥ यदुचूर्वा मरुतुनाः ॥ ३५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

३४

न ॥ नभाज्या रुतं लं कायाद्वृत्तायन ॥ ३६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 ल्यां मरुतुनः ॥ ३७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 दायन रुतं दवीष्टुलममुचन ॥ ३८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 ॥ ३९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 ॥ ४० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



नैरुमा यानयाकासनिष्पत्तां ॥ ११ ॥ रुग्णं धार्त्तिकं नियतिर्मां दृष्ट्वा क्राधसम  
 निमः ॥ विक्रयचामनः शूलं वा दोक्तं दयिमास्ति ननु ॥ १२ ॥ ननु धर्मसिंहस  
 मुः ॥ यः कुरु ॥ ननु स्थितः ॥ वा ॥ युद्धेन युयुधे सुनाञ्चोक्तं दधोचि  
 क्षा ॥ १३ ॥ युद्धमानो न नमो नु नमाना गमनाङ्गो ॥ युयुधाने निमं न  
 धीयहो नैव निदानी ॥ १४ ॥ ननु यमात्रवमुत्पत्य नृपत्यवमुत्पत्तिमात्र

३१

॥ कनयहान्धविनश्चामनस्य पृथक्कृतं ॥ १५ ॥ उदयुधश्च न होदयाधि  
 लाष्ट्रकादिरिह नः ॥ दनुमुक्तिं न लेख्येव कचालश्च नियतिनः ॥ १६ ॥ द  
 वीकुद्रागदायाम् धूर्ध्यामासुखाद्वन ॥ वाक्कलं रिचया लन वा दोक्तं  
 मथं धकं ॥ १७ ॥ उग्रस्य मुग्रवीर्यं च न लेख्येव न हानु ॥ विनशाच्च विधू  
 लन ऊघानयनमध्वरी ॥ १८ ॥ विजालस्यासिना कायात्यानयामासुवेधोच



॥ उद्ध्वं दुर्मुखं चोलीं धर्मे निश्चयमक्रयं ॥ १२ ॥ एवं स क्रीयमानमुः  
 स्वसेन्यमहिवा सुचः ॥ माहिषे दसवृथ दया दयामासमाना दान ॥ २० ॥  
 ॥ काष्ठि रुतय हा य द सुचक्रुथे नथ यवान् ॥ लंगूल नाठि नाध्या न्या ॥ ३६  
 गस्यां च विठा विमान ॥ २१ ॥ वलन काष्ठि दयवान् नादन प्रमनन चः  
 ॥ निष्कस्य वन नाया न्या नयामास रूत ले ॥ २२ ॥ निया लयु मथ नीक

न ह्य धावन मासु चः ॥ सिद्धं हनुं माहा दयाः कायं च कनकां वि का ॥ २३ ॥ स  
 यिका यान्न दावीर्यः सुचक्रु न्नेमही नलः ॥ दृग्मा र्यां यव्वे ननु सां धि क्रय चः  
 नला द च ॥ २४ ॥ वन नु न वि द्रु न्ना माहि नस्य द्या धी र्यो नः ॥ लंगूल नादः  
 नष्टा निः श्राव यामा स ॥ २५ ॥ धनं गृंग विरि न्ना ध्रु खं रुतं ययु द  
 ॥ २६ ॥ न्या निला साः दान ॥ निया गुने रू सा य लाः ॥ २७ ॥ धुनि को धन



साक्षात् सायनमर्कमहासुतं ॥ इष्टासायीति काव्यं ॥ नदधाय नदा कथाम् ॥  
 १० ॥ साक्षि ह्यानस्य वेदाधीनं नन्ववंधमहासुतं ॥ नत्वा ऊमादिर्व्यवृत्तं सायि  
 वक्ष्यते महामुधे ॥ ११ ॥ ननसि ह्यारवत्तथा यावत् सावि काष्ठिनः ॥ १२ ॥ क  
 केनावसुतृषः स्वप्नयाष्ठिन इष्टं न ॥ १३ ॥ ननप्रवासुयुतृषः दवीचिच्छदसा  
 यकीः ॥ नस्वप्नयमोहः साक्षि ननः सारुभलागजः ॥ १४ ॥ कथं च नला

३२

सिंहं नच कथं जगज्ज्व ॥ कथं नक्तु कथं दवी स्वप्नतनिवृत्त ननः ॥ १५ ॥  
 ॥ ननो महासुता नृपा साहिर्व्यवयुनास्थितः ॥ नत्येव क्राश्यामास ज्वला  
 कसिचन चर्व ॥ १६ ॥ ननः कुद्धा जगन्माता सीति कायाद्यमुक्तं ॥ ययोपु  
 नः युनश्चेव ऊहासावृक्षलायना ॥ १७ ॥ ननदयासुतः सायिवलतीर्थ  
 मदाद नः ॥ विषाक्षार्था वसिष्ठय चरि कांयनिरुधवान् ॥ १८ ॥ सायना



अहिनास्मान् चर्षयन्ति धनात्कथेः॥ उवाच नमो भद्राद् नमो मुखवागा कुला  
कृत्वा॥ ३५॥ दद्यात्वा॥ गङ्गा गङ्गा कृष्णं नृप सधुयावति वासादं॥ मया त्व  
यि हनते वगङ्गा न्या सुदवनाः॥ सावित्र्या॥ एवमुक्त्वा समुत्पत्य सा ४०  
पूय नमो महासुवर्णं॥ यादना कस्य कं रच गूलने वमना उयन्॥ ३६॥ नन  
ः सायियदा कान् कस्यानि उमुखा ननः॥ अर्धनिः कान् कचवानि दः

यावीर्यनमो वृत्तः॥ अर्धनिः कान् कचवानि सुदमानो महासुवर्णः॥ तया  
महासिना देया धिवाष्ट्रुत्वानियानि नः॥ ३७॥ नना हाना रुग्मिर्वदे  
त्यस्य नना हाना॥ यद्वैश्वयन्तं उग्मु स कला च वना गक्षा॥ ४०॥ गुरु  
वु स्मा सुना चर्षा सहदिशोर्महविशिः॥ अगुर्गै धैय तथा ननृगुष्ठा सना  
गक्षा॥ ४१॥ गूलने धीमा कं पुयुवात्वा सूर्या सावधिक मन्त्र कचदेवी



माहात्म्यमहिषासुत्रवधनाम गृन्थिष्ये ॥ ३ ॥ सधिवृत्वा ॥ ४१  
 कादयः सुचगता निरुक्तनिवीर्यो ॥ तस्मिन्दुनात्मनि सुवा निवर्तय देवा ॥ ना  
 दुःखं यदति नमो धिना धर्मा सा वाग्निः ॥ प्रहृष्य पुन का ज्ञमचा वृद्धाः ॥ दे  
 वा दुःखं ॥ दद्यात्तया नमो दंजुगदात्म धर्मा निः ॥ षडवगुह्य धर्मा समूहम्  
 ॥ ना म वि का म खिल दवमृषिपूयां ॥ रुक्मान नाः समविदधामुशु रानि माः

नं ॥ यस्याः पुरा वसन्तं रुगवाननन की व्रज्ज हवधन हि वकुमलं व  
 लं ॥ ना र्चि का खिल यं जगत्पुत्रिया लना य ना धाय सा धु रुरय समति  
 क ॥ याः श्रीः स्वयं सु कृति नां रुवन वल श्रीः ॥ या यात्म नां रुवा धियां ह  
 दग दुःखिः ॥ धृष्टा समा कुल जनय रुव स्या लजा ॥ नां तान नाः समय वि  
 या लय द वि वि धर्मा ॥ किं व धर्मा म नू य म वि न्य म न किं या नि वी र्य म सुचरु ॥ ना



य काचिन्ननि॥दि॥सु॥नि॥नि॥वा॥नियानि॥सर्वेषु॥द॥य॥सु॥न॥द॥व॥  
 ग॥द॥दि॥क॥पु॥॥॥सु॥म॥सु॥ज॥ग॥ग॥गि॥गु॥द॥यि॥द॥धे॥॥ने॥सु॥य॥म॥द॥नि॥  
 या॥दि॥हि॥न॥य॥या॥ना॥॥सर्वो॥थ॥या॥खि॥त॥मि॥द॥ज॥ग॥द॥ं॥रु॥म॥॥म॥या॥॥ना॥हि॥॥४२  
 य॥न॥मा॥यु॥क॥नि॥स्त्व॥मा॥या॥॥य॥स्याः॥स॥म॥सु॥न॥ना॥स॥मु॥दी॥व॥(६)न॥॥गृ॥हि॥य॥या॥  
 नि॥सु॥क॥ल॥पु॥न॥शे॥पु॥द॥वा॥॥स्या॥ह॥सि॥॥यि॥गृ॥ग॥द॥न्य॥च॥गृ॥हि॥हे॥गु॥॥नृ॥शार्थ॥

स॥त्वं॥म॥ग॥प्र॥वृ॥ज॥नेः॥स्य॥ध॥च॥॥या॥मु॥क्ति॥ह॥गु॥न॥वि॥वि॥च॥म॥हा॥व॥ना॥च॥॥अ॥त्य॥स्य॥  
 स॥मु॥नि॥य॥ग॥द्वि॥य॥न॥त्व॥ला॥नेः॥॥भा॥क्रा॥थि॥रु॥म्भु॥नि॥रि॥व॥॥स॥म॥सु॥द॥धे॥॥वि॥द॥  
 सि॥सा॥रु॥ग॥व॥नी॥य॥च॥मा॥हि॥द॥वि॥॥॥ध॥द॥लि॥का॥मु॥वि॥म॥ल॥गु॥रु॥वा॥नि॥ध॥न॥दोः॥  
 धे॥म॥मु॥ज्ञा॥न॥न॥म्य॥य॥द॥या॥प॥व॥नी॥च॥मा॥स्ना॥॥द॥वि॥न॥यी॥रु॥ग॥व॥नी॥रु॥व॥वा॥व॥ना॥य॥॥  
 वा॥हो॥सि॥सर्व॥ज॥ग॥ग॥य॥न॥मा॥हि॥ह॥उ॥॥म॥ध॥सि॥द॥वि॥वि॥दि॥ना॥खि॥ल॥गु॥म॥स्य॥



॥ दुर्गेसिदुर्गेरवसराचनोनासंग ॥ धीः केटरादिहृदयेककृताधि  
 वासा ॥ लोनीत्वमेवहाहिमीलितनयनिष्ठा ॥ धीमत्सहासममलयनि  
 घूर्णयद्य ॥ विंवातुकात्रिकनकारुमकार्णिकार्ण ॥ अत्यरुर्गयकर्ममा  
 कुरुषातथायि ॥ वक्रविलोकासहसामहिषासुवद्य ॥ इच्छानुदविकुयि  
 पुकुटीकचालमुद्यच्छर्माकक्षादृष्टाद्विविन्नसद्यः ॥ याक्षांमुमाचमहि

४३  
 न

कुनामनयकायचिनायपायं ॥ संगामनृसुमाधिगम्यादिवयुयान् ॥ म  
 न्यनिननमहिनात्रिनिर्दसिदवि ॥ इष्टैर्वर्केनरुवकीप्रकचानिरुस्म  
 ॥ सच्चैःसुनानिषुयन्याहै (धा) विष्ठां ॥ लोकात्प्रयान्त्रियवायिहि  
 सुयमा ॥ धूर्त्यमविरुवनिर्गच्छादिकनिमाधी ॥ खड्गप्रलानिकचविस्तुप  
 ल (धा) गो ॥ हृत्तागोनिवहनृष्टासुजाहा ॥ यन्नागकाविलयर्मधुमं

को



तदु खंठु याग्या ननं न व विल्ला क य मां न द न न ॥ दुर्वृत्त दुर्वृत्त म न न व  
 द विष्ठी लं ॥ नृप नं (थे न द वि चि न्म्य म नु ल्य म न्यैः ॥ वीर्ये च ह नृ ह न द व  
 य ना क मा क्षं ॥ वे नि ष यि य क टि ने व द या त्व य त्यः ॥ क नी ये क र व न  
 न म्प य ना क म स्य ॥ नृप च क्ष पु र य का र्ये नि हा नि कु र ॥ नि ह नृ यो न  
 म न नि षु न ना च दृ ष्ट ॥ त्व य व द वि व न द नृ व न न य यि ॥ वे ला क म न न

45

✽ २२३ ✽

दखितं नियुनाहानन ॥ गानं त्वया समप्रभुर्द्विनिर्गयिहत्वा ॥ नीनादि  
 वं चियुगं ॥ रुयमयायात् ॥ नत्मा के मुनयः सुवाचिरु वन्नमस्क ॥ धूलि  
 नयादिना देवियादि स्वङ्गन वञ्चिक ॥ यं टास्वः यादि सायुष्मिनिः स्वन्न  
 च ॥ याचां च रुयमीचां च वञ्चिक च रुदक्रिह ॥ सामक्षात्मा धूलि सुदक  
 चर्या नथध्वनि ॥ सोम्यानि यानि नूयानि जेला कवि च नकि न ॥ यानि चाख



यथा नाभि नैव क्रास्मान्धारुवं ॥ स्वप्न हूलगदादिनि यानि चान्तादिनीदि  
 का ॥ कनयन्त्रवसंगीनि नैव स्मान्क्रमवेनः ॥ **अथि नृवाच ॥** नृवं सुनामुः  
 श्रीदेवोः कुसुमेन च नाद्रुवेः ॥ अथिनां जगन्नाथजी नथगंथानुत्तयनः ॥  
 रुक्मासमस्मिदलो दिवोधूयस्सुधयिना प्राह यमदसु सुखि समस्तानय  
 क्षान्तमुचान् ॥ **दयुवाच ॥** विद्यमानिदं ॥ सर्वे यदस्मात्कारि वांछि नैव

ददास्यहमनियीत्यास्मवेपरिसुयुजिता ॥ **दवाड्यु ॥** रुगवत्या कृन्सर्व  
 नकिंचिदवशिष्टं ॥ यदयं निरुनः ॥ नृ + च स्माकं महिषासुचः ॥ यदिच  
 यिव आदयस्त्वया स्माकं महध्वनी ॥ संस्मृता संस्मृता त्वन्ना हि सथाऽयन्  
 मायदः ॥ यश्च महिषवेपरि स्त्वस्माद्यायमलानन ॥ नस्य विरुद्धि विरुवे  
 दिनदावादि संयद ॥ **दृश्यस्मत्य सन्नात्यं रुवथाः सर्वदा विक** ॥ **अथि नृवा**



**च॥** ॐ निष्प्रसादिना देवेर्जगन्नाथेन ध्यात्मनः ॥ नथ युष्माकं कारुण्यका  
 लीवरुवाकृतिना नृप ॥ ॐ ह्यनत्कथिनं रयसं हनासाय धारुणम् ॥ वः  
 धाय दुष्टदेहानां तथा ह्युनिर्धु रथां ॥ नृनाय च लोकानां देवानामु  
 यकाविधी ॥ नृहृष्टमया स्वार्गं यथावत्कथं यामि न ॥ ॐ निष्प्रसा  
 दैः युनाथैः सूर्यो मावर्तित कमन्व न न देवी माहात्म्यं कादिस्तु

४०

गिनाम चतुर्थस्त्रया ॥ ४ ॥ अष्टिपूजाय ॥ युनाथैः रुनिर्धु रथां  
 मुनाथैः सचीयनः ॥ ॐ नृनाय च लोकानां देवानामु  
 यकाविधी ॥ नृहृष्टमया स्वार्गं यथावत्कथं यामि न ॥ ॐ निष्प्रसा  
 दैः युनाथैः सूर्यो मावर्तित कमन्व न न देवी माहात्म्यं कादिस्तु



महासुनायां नान्यवीर्यमनंतयनाजिनां ॥ ४ ॥ नयास्मा कंवनादलायथा  
यत्नसुमाखिलाः ॥ नवर्तनायिष्यामि ननक्रुष्टाय नमायदः ॥ ५ ॥ ४४  
निकृत्वा मर्तिद्वो हिमवर्तनलायन ॥ उगुस्तु नमनादवी विष्णुमायां यष्टु  
वुः ॥ दवाडुवु ॥ नमादवो महादवो धिवाये सनन नमः ॥ नमः यद्वह्ये रु  
दाये नित्यनायदनाः स्मनां ॥ १ ॥ योदाये नमानि त्याये लोयो धाये नमा

४३

नमः ॥ अस्माये वदुनयिष्ये सुखाये सनन नमः ॥ २ ॥ कल्याय यदा  
नाट्टी सिद्धी कुम्भा नमानमः ॥ नैयत्ये रु र्ता लकी वाचो नो नमा  
नमा ॥ ३ ॥ दुग्गाये दुग्गाया नाये सानाये सर्वकायिष्ये ॥ स्वा हो नये वरु  
काये धूम्राये सनन नमः ॥ १० ॥ अनिमौम्यनि योदाये नमा कस्ये नमा  
नमः ॥ नमो उगल्यनि क्षाये देवी कर्तु नमो नमः ॥ ११ ॥ यादवी नव



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तु  
भ्यं नमो नमः ॥ १२ ॥ या देवी सर्वरूपेण युक्तनेत्रा रिधीयते नमस्तु  
भ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः ॥ १३ ॥ या देवी सर्वरूपेण युक्त  
दिप्रयेशसीस्थिता ॥ नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः ॥ १४  
॥ या देवी सर्वरूपेण युनिडाप्रयेशसीस्थिता ॥ नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तु

भ्यं नमो नमः ॥ १५ ॥ या देवी सर्वरूपेण युक्तुष्माप्रयनेसीस्थिता नमस्तु  
भ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः ॥ १६ ॥ या देवी सर्वरूपेण युक्तायात्र  
प्रयेशसीस्थिता ॥ नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः ॥ १७ ॥ या देवी स  
र्वरूपेण युक्तादिप्रयेशसीस्थिता ॥ नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः  
॥ १८ ॥ या देवी सर्वरूपेण युक्ताप्रयनेसीस्थिता ॥ नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तु



50

सुस्य नमस्तु स्यै नमो नमः ॥ १३ ॥ या देवी सर्वरूनेषु ब्रह्मा वृषेष्टा संस्थिता ॥  
 नमस्तु स्यै नमस्तु स्यै नमस्तु स्यै नमो नमः ॥ १४ ॥ या देवी सर्वरूनेषु  
 कान्ति वृषेष्टा संस्थिता ॥ नमस्तु स्यै नमस्तु स्यै नमस्तु स्यै नमो नमः ॥ १५ ॥  
 या देवी सर्वरूनेषु लक्ष्मी वृषेष्टा संस्थिता ॥ नमस्तु स्यै नमस्तु स्यै नमस्तु  
 स्यै नमो नमः ॥ १६ ॥ या देवी सर्वरूनेषु वह्नि वृषेष्टा संस्थिता ॥ नमस्तु



सो नमस्तुभ्यो नमस्तुभ्यो नमो नमः ॥ १० ॥ या देवी सर्वरूपेषु स्मृति  
 धर्मस्थिता ॥ नमस्तुभ्यो नमस्तुभ्यो नमस्तुभ्यो नमो नमः ॥ ११ ॥ या  
 देवी सर्वरूपेषु धृतिरूपेण स्थिता ॥ नमस्तुभ्यो नमस्तुभ्यो नमस्तुभ्यो  
 नमो नमः ॥ १२ ॥ या देवी सर्वरूपेषु दया रूपेण स्थिता ॥ नमस्तुभ्यो नम  
 स्तुभ्यो नमस्तुभ्यो नमस्तुभ्यो नमो नमः ॥ १३ ॥ या देवी सर्वरूपेषु बुद्धि रूपेण स्थि

॥ इव नैवमादृक्चिद्रूपं दृष्टं कनचिदुल्लसं ॥ ह्ययनां कायसौ दवी गृह  
ह्यर्नाचा सुखं धनं ॥ ३५ ॥ श्रीचतुर्मनोवार्धनी शोभयन्ती दिक्षु स्त्रिया  
॥ सागुनिष्ठमिदं देहं च नानां रुपांश्च ह्यमरुनि ॥ ३६ ॥ या निमन  
चा मया ध्यानी वैद्यता ॥ ये लोकैः सुसमस्तानि सांयनं प्रानि गृहे ॥ ३  
॥ येनैव तः समानीनां गच्छन्तं युवचनम् ॥ या निजं न गृह्यन्ते नये



तो चैष्ठ्यारुय ॥ ४० ॥ विमानं हंसं संयुक्तं मेव हि स्थितिनेन ॥ ४१ ॥ न तत्र  
 रूपाणि हानी न यदासीदेधसोऽङ्गुलं ॥ ४२ ॥ निश्चिरेव मरुतः ॥ स  
 मानो वा पनेध्वयान् ॥ किं कल्किर्नादयौ चास्मिन्मातामह ॥ ४३ ॥  
 ॥ ४४ ॥ वयं वाचूष्मन्तरे कांचनं प्राविनिष्ठमि ॥ नथायस्य ॥ ४५ ॥  
 नासीत्प्रजायते ॥ ४६ ॥ मृषातून्कां निदानं महाकिरीडा त्वया हना

५४

॥ यावत्सलिलं वा जस्य शत्रुस्तव यत्रिग्रह ॥ ४४ ॥ निष्ठुरस्यास्त्रिजाना  
 श्वसमस्तान्तरजः प्रयः ॥ वदन्ति यपि देवैर्दुष्टैर्मेघि सोवेयवाधवा ॥ ४५ ॥  
 ॥ ४६ ॥ त्रैवदेवैश्च यत्नानि समस्तान्याह्वयानि मे ॥ श्रीनलमैषा कल्याणं त्वया व  
 र्णनं गृह्यते ॥ ४७ ॥ आविष्टवाच ॥ निःसमेति च यः शुंरुः स न दोषं  
 मूर्तयोः ॥ प्रेषया मासं सुग्रीवं दूतं देवो महानुभवं ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ निश्चिरेव मरुतः



॥ अथागतावचनाभस ॥ यथावायेति संपीया तथा कार्यं त्वयात्तु ॥  
 ॥ ४१ ॥ अथैव वाच ॥ सगुगतायनास्ते लोलेदेहाणि ह्यरुन ॥ नैवदेव  
 मतः प्राह ह्यक्लामधुनयोगिना ॥ ४२ ॥ दूत उवाच ॥ देवि देहवधवः  
 हः वैलोक्य यत्र मेधवः ॥ दूतौ हं प्रेक्षितं मे न त्वत्सकाशमिह गतं ॥ ४३ ॥  
 ॥ अथाहं नारुः सर्वो मुयः सदा देवयोनिषु ॥ निजि नास्ति तदेत्यादि ॥

॥ ४४ ॥ दुग्गाहगवनी रुद्रा यत्र दंष्ट्रा चानेकगता ॥ ४५ ॥ अथैव वा ॥ स  
 मं त्वयानास मिथ्या किंचित् त्वया ॥ ४६ ॥ अथैव वा ॥ धियनिः शुभा निधु  
 र्मुखापिमादृशः ॥ ४७ ॥ किं त्वयं सत्यमिह न मिथ्या न कश्चि यत्र कर्ध ॥  
 ॥ ४८ ॥ मां मलयवृद्धि त्वात्पुनिरुत्तय रुद्रादुच्यते ॥ ४९ ॥ यो मां ज्ञेयति संश्रयो  
 दर्शयति हति ॥ यो मे यतिवलो लोके स मे रुद्रो रुचि त्वामि ॥ ५० ॥



कलागच्छमुपुश्रुनिर्धुंरोवामहासुत्रः॥मांदि॥आर्कंयिचेनाय॥याः  
 धिंशुद्रातुमेलयु॥३३॥दुग्धुवाया॥अवलिष्ठासिमेवंतंदेवीवृहि  
 मसाग्रं॥३४॥लोकेकःपुमानिष्टेदयेर्धुंरुनिर्धुंरुयोः॥३४॥अन्येषा  
 मायिदैत्यानां सर्वदेवानवैशुधि॥निष्ठानिसंभुखेदेवीकिंपुनस्तीलसेकि  
 का॥३५॥ॐ॥आद्याःसकलदेवास्तस्मैवायानसंयुगा॥३५॥निर्धुंरुनां कथं

३५

निष्ठा॥३६॥यायास्यसितभुवः॥३६॥सात्वंगद्वमयेवोक्ता॥आर्ध्व॥रुनिर्धुंरु  
 याः॥३७॥केशाकद्वेष्टानिद्रुग्धुंरुनामागमिध्यानि॥३७॥देवुवाच॥अवमेत  
 दह॥३८॥निर्धुंरुश्रानिदीशेवान॥३८॥किंकनोमिध्यानिद्रुग्धुंरुनामा  
 दिव्यपुत्रा॥३९॥शोकंयदेवत्सर्वमोदुवः॥३९॥कदाचक्षासुनद्रायमय  
 सु॥४०॥निर्धुंरुमांके॥४०॥पुत्राक्षमूयसावहिकेमन्त्रं॥४०॥

३६  
 ३७  
 ३८  
 ३९  
 ४०







गानां चारितेषु या ॥ १८ ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु वा यो देवो नमो नमः ॥ १९ ॥ वि  
 निवृथेष्टया कृत्ते भगव्या प्यास्थिता ऊगन ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु  
 नमो नमः ॥ २० ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु  
 सविता कृत्ता नमस्तु नमस्तु ॥ २१ ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु  
 यदं ॥ यामां यतं यदं यतं यतं यतं यतं यतं यतं ॥ २२ ॥ नमस्तु नमस्तु

३२

दनाः केचित् केचित् खड्गनादिनां ॥ २३ ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु  
 नमस्तु ॥ २४ ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु  
 दावतां कालीमगिनीवर्णा ॥ २५ ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु  
 नमस्तु ॥ २६ ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु  
 कानि नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु



**॥ ११ ॥** मनो उहासा **॥ १२ ॥** लीमं सेवनादिनी **॥** काली कया **॥ १३ ॥**  
 उहासा नो दहा **॥ १४ ॥** उत्थाय चम हासि हा दे नो **॥ १५ ॥**  
 हीवा चा सा के हा पु **॥ १६ ॥** हा दे के ना छि ना छि नन **॥ १७ ॥** अध नरे **॥ १८ ॥**  
 इहा चं नु निया नि न **॥ १९ ॥** नम या या न ये रु मो **॥ २० ॥** न  
 न हा र्प न न **॥ २१ ॥** मे न्य इहा चं नु निया नि न **॥ २२ ॥** मुं उ च सु म हा वा श **॥ २३ ॥**

५३

**॥ २४ ॥** या नु रं **॥ २५ ॥** विन शं उ न्य काली न **॥ २६ ॥** हा स मिश्र मय **॥ २७ ॥**  
**॥ २८ ॥** युद्ध यरु स्वयं रं नि रं **॥ २९ ॥** नम या न **॥ ३० ॥**  
 नानो इहा चं नु न **॥ ३१ ॥** उ न न काली क त्या सी **॥ ३२ ॥**  
**॥ ३३ ॥** नम या न **॥ ३४ ॥** नम या न **॥ ३५ ॥**



हा

देवदेवी हविष्यनि॥ २७ ॥ ॐ निष्ठीमाक्रे (छु) पुत्रा (धर्म) या सावधि  
देवचक्रवे देवीमात्मो चंते सुते वधनाम सम्यक् मोक्षाय॥ १ ॥  
॥ अथि प्रवाचा ॥ चंते च निरुने देह सुते च विनियोगिने ॥ वक्रुले सुचसे  
चोयु कचिनेषु सुवेधनः॥ १ ॥ नमः कोयय आधीन सनाः धुं रुः प्रमायदा  
न॥ २ ॥ योगं सर्वमे न्यानां देहाना मादिदेवद॥ अथ सर्वे वले देह्याः पञ्चशीति

वात्रिना॥ १० ॥ ननस्मिन्ननये ह्य विनासां यस्तु तद्विषां ॥ रुकायामनसि  
हाना मतिवीर्यवलाचिनाः॥ ११ ॥ वदे शगुरुविष्कुनां नथे च स्यवशा  
करः॥ अत्रीने शोविनिष्कुम्य नड्यै र्छित्ति काययुः॥ १२ ॥ यसा देवस्य य  
र्यं यसा रूयदाहने॥ न च देवो हि न ह्यकि न सुत्रानो दुमाययो॥ १३  
॥ ह म सु काविमानात्र साकं धू च मं उ ह्युः ॥ आयां गा वरुधधकि वः



द्वाही सारिधीयने ॥ १४ ॥ माहे धत्री वृषा वृद्धा ॥  
 हा दिवला या या का रात्रि ये या विरूय द्वा ॥ १५ ॥ को  
 वृद्ध वृद्धा ॥ सो द्वा मर्या य सो दे हा नंदिका ॥  
 वृद्ध वृद्धा ॥ सो द्वा मर्या य सो दे हा नंदिका ॥  
 य सो ॥ १६ ॥ य वृद्धा नंदिका ॥ य वृद्धा नंदिका ॥  
 य वृद्धा नंदिका ॥ य वृद्धा नंदिका ॥

य वृद्धा नंदिका ॥ १७ ॥ नाग सिंदूर सिंदूर विजनी सहस्र वयुः ॥  
 या का नंदिका ॥ या का नंदिका ॥ या का नंदिका ॥  
 या का नंदिका ॥ या का नंदिका ॥ या का नंदिका ॥  
 या का नंदिका ॥ या का नंदिका ॥ या का नंदिका ॥  
 या का नंदिका ॥ या का नंदिका ॥ या का नंदिका ॥



मिनाशं निनादिनी ॥ २२ ॥ साचा ॥ सोमान  
॥ ॥ पूर्वगळरुगवन्मर्षे, धुरनिधुंरुयोः ॥ २३ ॥ न दि. शं. रानि  
॥ ॥ यवाचोयानवाहक यवाचोयानवाहक ॥ २४ ॥  
विष्णुमिच्छात्तरुर्गा देवाः सन्तु हतिरुर्गा ॥ २५ ॥  
कोविदुमिच्छा ॥ २६ ॥ यत्नान्ते यानवाहक यवाचोयानवाहक ॥ २७ ॥ न द्यागळ

ननुयानु, सद्धिवाः यिष्टिनेनवः ॥ २८ ॥ यानोनियुक्तोदैत्य ननदादेवाः  
शिवः स्वयं ॥ शिवदुर्गीतिलोकेस्मिन्मनः साख्यादिमागता ॥ २९ ॥ नोयेध  
त्वावचोदेवाः सच्चिदानंदं महासुताः ॥ अमर्षोयन्मिना अमु रय्यकात्यायनी  
स्थिताः ॥ ननः प्रथममेवावेष्टा रक्षकृष्टिष्टिर्गः ॥ ववषुनूदनामचो र  
मिनामननरसः ॥ ३० ॥ साचमनुप्रदिनाचाक्ष कूलवक्रयचरु ॥ ३१ ॥



विद्धे दलील साधान धनु मे कै मो हे रिः ॥ १० ॥ न स्या ग्रन रुथ काली धू  
 लेया न विद्या विमान ॥ खड्गं गयो धिनां ध्वनी कुर्वन्ती वायव रुदा ॥  
 ॥ कर्मं तु लज्जला के ये रुत वीर्यो हनो यथाः ॥ वस्त्राधी यत्ने नृपे नमन ॥ ५३  
 समावति ॥ ३२ ॥ मा हे श्वरी विधूलेन गथा च के हा वै क्व वी ॥ देह क जान को  
 मा श्री गथा हा कृ नि को यना ॥ ३३ ॥ श्री कुलिहा यानेन धन सो देह दान वा

॥ ४० ॥ कुलिहा नाह न स्या शु ग स्य सु सा वल्ला धिनं ॥ स सु रु स्थ रु ने याथा  
 कद्रया रु ल्या कुमाः ॥ ४१ ॥ याव नः या धिना रु स्य धनी नाद क वि चर  
 ॥ नाव नः यु पू वा जा बा रु दी यो वल वि कुमां ॥ ४२ ॥ ने वा यियु यु धु रु रु यु  
 रु रु व क स रु वाः ॥ स मं मा नृ रि व रु युं स रु या ना नि री यर्ष ॥ ४३ ॥ यु न थ  
 व उ या ने न रु न म सा धि यो यना ॥ व वा ह न कं यु पू वा रु तो आ ना स रु रु म ॥







॥ ३३ ॥ नस्याविनिर्जनां नु कस्यो ह सापियावागी ॥ कालिके नि  
 समाख्या गा हिमाचलक नाध्या ॥ ३४ ॥ ननीविकां यवयूयं विद्या हांसुस  
 नाहव ॥ ददहं रंता मुंठुश्च रुसौ धुं रुनिधुं रुयो ॥ ३५ ॥ नासां धुं रुय  
 रवा ना अमीव सुमना हवा ॥ काया रुम्मी मरुना उ रासयनी हिमाचलं

॥ ३६ ॥ ननदारिद्र नोरुमौ मुद्धिनो नियया नरु ॥ ३७ ॥ ननोनिधुं रु  
 संयाय वेमना मारुका मुकः ॥ अजयान धनै देवी का ली के धनि धान  
 धा ॥ ३८ ॥ युनध रुत्वा वादुना मयु नंद मुजं धनं ॥ चक्रा युधेन दिनिज  
 द्याद या मास रं ठिकां ॥ ३९ ॥ ननो रुगव नी कुद्रा दुग्गो दुग्गो कि ना धिनी  
 ॥ ४० ॥ ननो निधुं रु वेगे



ने गङ्गा मादाय चंठिका ॥ अथ धावन वैदिक देहमेनामसा ॥ ३० ॥  
 मयायन मये वासु गदासिद्धे चंठिका ॥ स्वप्ने नाधि मध्याये धा म च धूलं  
 लनाददे ॥ ३१ ॥ धूल रुक्तं मयायानं निधुं रुक्तमवापमं ॥ हृदि विधाये ॥ ३२ ॥  
 गृहे न देग विद्धे न चंठिका ॥ ३३ ॥ रुक्मसा रुक्मधुले रुक्मसा निह  
 र्मसाय नः ॥ महावलो महावीर्यमिष्टमियु यूषावदन् ॥ ३४ ॥ नमनिद्रा

ना लायधिनमो सुते ॥ १२ ॥ किं पीठिनि महावडे सहस्रनयनो कले ॥ वृद्धया  
 धारु वै चै न्द्रिना नायधिनमो सुते ॥ १३ ॥ धिवद्वगी स्वयूये धारु गदै ह्य महावले  
 ॥ यो न यूये महावावे ना नायधिनमो सुते ॥ १४ ॥ दंष्ट्रा कना लवदने धि नोमा  
 लादि रुय धा ॥ यामुधे मुंठ मथने ना नायधिनमा सुते ॥ १५ ॥ लक्ष्मी लडे महा  
 विद्धे ॥ १६ ॥ युष्टि स्वधे रुवे ॥ महावाणि मोहा विद्धे ना नायधिनमो सुते ॥ १७ ॥ मेधे



सवस्वतिवनेयतिवाउविनामसि॥ निषमेत्वंयसीदेष्टानायायधिनमो  
 सुते॥ १०॥ सर्वेभःयाधियायानेसर्वेभोक्रिष्टिनेमुखि॥ सर्वेभःष्टवष्ट  
 ध्याष्टानायायधिनमोसुते॥ १६॥ सर्वेभ्यूपेसर्वेष्टसर्वेष्टाकि समचिने॥ ६४  
 रुययस्तुष्टिनेदेविनायायधिनमोसुते॥ १२॥ जनकवदनंकोमालोयन  
 वयस्तुष्टिने॥ यागुनःसर्वेष्टनिश्यःकास्यायधिनमोसुते॥ २०॥ काला

कजालमसुयमलोयासुचसुदनं॥ विष्टुलंयागुनोरीनेरुद्रकालीनमोसु  
 ते॥ २१॥ दिनस्तिदैत्यनेजासिस्वनेनायूयोयाऊगन॥ सायंठायागुनोदेवि  
 यायेष्टो नःसुमानिय॥ २२॥ असुनासुग्यसायंकचष्टिनमेकयोऊलः॥ शु  
 लायस्तुष्टिनेरुद्रगुचंठिकेताननावयं॥ २३॥ योगानल्लयानयदंमिष्टुष्टुगु  
 कामस्तुष्टलानलीष्टान॥ त्वामाधिनानानविद्यन्नवाधं॥ २४॥ त्वामाधिन



॥ सुयनां यांनि ॥ ननं नयत्कदनं त्वया द्वा द्वन्मदिषा देवि म हासु ना धां  
॥ १५ ॥ वृथैव धके वैकु धात्ममति हृत्वा वि के न ल्य क नो नि का न्या ॥ विद्या सुः  
शास्त्रे सु विवेक दीपै ॥ १६ ॥ घन्ये शु वा के सु च का त्व द न्या सम त्व ग के नि म हां  
ध का न ॥ विद्या मय ले न द नी व वि ध्वं ॥ १७ ॥ प क्रां सि य गो य वि द्या ध ना ग म य  
जा न यो द सु द ल नि य व ॥ दा वा न ले य व न थ जि म ध्य न ग द स्थि ना त्वं य वि द्या

सि विष्णुं ॥ विष्णोश्च नीलं यत्रियासि विष्णुं विष्णामि का धावयसी नि विष्णुं ॥ २८ ॥  
 ॥ विष्णोश्च वन्द्या रुवर्मा रुवन्कि विष्णुं ध्यायेत्तस्यैव किं नमः ॥ देवि प्रसीद यत्रि  
 या त्वय नाचिरीते नित्यं यथा रुचव धादधुनैव तस्यैव ॥ या या निमूर्ध्व ऊर्गमां प्रक्षाम  
 न्नयः शुद्धत्यागया कुरु निर्मांश्च महोदसः प्रान ॥ प्रक्षामानां प्रसीद त्वं देवी विष्णोः  
 रित्तिराभिधि ॥ त्रैलोक्यार्थी नामीशु लोका नां विवदाहव ॥ दधुवाच ॥ वचदाहं



॥ ६॥ वनं ऊननसेष्ठथ ॥ नंदुधुधंययकामि ॥ ऊननामुयकारकं ॥ ६॥  
 ॥ ७॥ सुयुः ॥ सर्ववाधायममनं ॥ वैलोकास्यारिवलेष्टनी ॥ ७॥ वनमेतत्तयाकाशे  
 ॥ ८॥ समदैविविनाशनं ॥ ८॥ देवुवाय ॥ वैवधमेकपेयैके ॥ अस्याविंशतिमेयु ॥ ८॥  
 ॥ ९॥ रोनिधुंरुष्टेवान्यां वृत्तस्यमहासुये ॥ नन्दुः ॥ यगृहेजानायक्षेदाग  
 ॥ ९॥ रसरवा ॥ ननसोनाधायैयामि ॥ विन्ध्याचलनिवासिनी ॥ युनययानिवोड

॥ १०॥ सुयेधयथिवीतले ॥ अवनरीशदनिध्यामि ॥ वैयचिरासुदानवान ॥ १०॥ रुक्य  
 ॥ ११॥ अथनानुग ॥ त्वेयचिरासुदान ॥ ११॥ नकादकारविष्टांकिदाहिमीकुमु  
 ॥ १२॥ सोयमाः ॥ ननोमान्देवताः ॥ स्वर्गमत्यलोकेचमानवाः ॥ १२॥ सुवकोव्याहविष्टाः  
 ॥ १३॥ निसगनंनकदंनिकां ॥ १३॥ रुयधुधनवायिका ॥ मनवृष्ट्यामनंरुसि ॥ १३॥ मुनिरिः  
 ॥ १४॥ संसु ॥ नारुमौसंरुविष्टाम्यशोनिजा ॥ १४॥ ननः ॥ धनेननेनानानिचिक्रियामियः



मुनीन् कीरयिष्यामि मनुजाः क्षताक्रीमिविमानकनः॥ न तोहमस्वित्तलो  
कमात्मदेहसमुद्भवैः॥ रुचिष्यामि सुताः क्षाकै च वृष्टे प्राधधायकैः॥ क्षाकै  
रुचिष्यामि नदा जस्यासाहं वि॥ तन्नेव च वक्षिष्यामि दुर्गमास्वामहा २१  
सुतं॥ दुर्गमादेवी निविश्यामं तन्नेनामरुविश्यामि॥ पुनश्चाहं यदा श्रीमं त्रयं कृत्वा  
हिमायते॥ न कां सिरुक्रयिष्यामि मुनीनां प्राधकायधान्॥ न दामां मुनयः सर्वे

लोकां नाना मूर्तेः॥ क्षासादेवी निविश्यामं तन्नेनामरुविश्यामि॥ यदा त्र  
क्ष्मास्वित्तलो कमात्मदेहसमुद्भवैः॥ रुचिष्यामि नदा जस्यासाहं वि॥ तन्नेव च वक्षिष्यामि दुर्गमास्वामहा  
दं॥ त्रैलोक्यस्य हिमायते॥ तन्नेनामरुविश्यामि नदा जस्यासाहं वि॥ तन्नेव च वक्षिष्यामि दुर्गमास्वामहा  
स्वित्तलो कमात्मदेहसमुद्भवैः॥ रुचिष्यामि नदा जस्यासाहं वि॥ तन्नेव च वक्षिष्यामि दुर्गमास्वामहा  
दं॥ त्रैलोक्यस्य हिमायते॥ तन्नेनामरुविश्यामि नदा जस्यासाहं वि॥ तन्नेव च वक्षिष्यामि दुर्गमास्वामहा



वैमल्यकन्देदीमाहात्म्येनावायमिह  
 देवुवाच॥ अरिःसर्वैश्चमानिह्यंकोयाच्यःसमृद्धिर्नष्टा  
 लीत्यर्थात्समायिष्याम्यनंक्षर्य॥ १॥ अथैवमवाच  
 कीर्तिरिहोत्तमैर्गददधंशुभानिर्गदयं॥ २॥ इत्युवाच  
 वैक्येनसः॥ शिष्यान्निवेद्यैवैवमवाच॥ ३॥ नमेर्वाहुः॥

॥ मनुष्यो मत्स्यसादेन रुविद्यमिनसंक्षयः ॥ १२ ॥ धृत्वाममैव न्ना हात्म्यं न धाः  
 चोत्पल्यः शुक्रः ॥ यथाक्रमं च युद्धेषु जायते निरुयः युमान् ॥ ३१ ॥ अथ  
 वसं क्रूरं यात्रिकं कल्याणं चोययद्यते ॥ न चने च कुलं युसां मा हात्म्यं न मशृद्ध  
 तां ॥ १४ ॥ क्षत्रिकं मोक्षिसवेगु न धादुः स्वप्रदक्षने ॥ ग्रहीता सुचा गामुः  
 मो हात्म्यं शृष्टुया नम ॥ १५ ॥ दुसग्गोः समं किं यग्रहीता श्वदा वृद्धः ॥ दुः



स्वप्रचनुरिदं दुस्वप्नमुपजायते ॥ १४ ॥ बालगदहिरुगानां बालनां  
क्षान्तिकायकं ॥ संद्यानरे देवतृष्णं मैत्री कवधसुहृत् ॥ १५ ॥ दुर्वेनानाः  
महोपाधौ वल्लहानि कवयव ॥ चक्रोत्तरपिष्ठाचानां यथना देवेनाक्षान्तं ॥ १६ ॥  
॥ १७ ॥ सर्वममैतन्माहात्म्यं मनसा न धिक्कायकं ॥ यद्युपयाद्येध्वेष्टगंध  
दीयेत्तथा रुमेः ॥ १८ ॥ विद्याधमं लोउनेहो मेः यो रुनीये वह निष्ठा ॥ १९ ॥

२०

नीध्रविविधैरोगैः प्रदाने वत्सने धया ॥ धीनिर्मलकृपने चास्मिन्नकृत्तुचवि  
नेष्टमे ॥ २० ॥ हनं हयनियायानि नथानोग्यं ययच्छति ॥ २१ ॥ चक्रां कवोनिः  
रुनेयो उन्नना कीरुनेममः ॥ युद्धेषु च विनंजने दुष्टने देवेनि वरुहं ॥ २२ ॥  
॥ २३ ॥ नास्मिन्नकृते न माहात्म्यं रुयं युंसां न जायते ॥ युष्मारिक्तु न यो याश्च याश्च व  
क्रियेरिः कृताः ॥ २४ ॥ वत्सा न च कृता सा सुप्रयच्छति शुभं मर्मि ॥ २५ ॥



॥ यान्कनेवायिदावायिरुजिता ॥ २३ ॥ दस्यु रिचोवृ नः धूने गृही नो वा  
 यिषाक रिः ॥ सिंह द्या द्यानु या नो वा वने वा वन रुमि रिः ॥ २४ ॥ चाला कुदे  
 न वारु फो वधो वेध न गो यि वा ॥ आधु धि नो वा वा ते न स्थि नः यो ने महा धे वे  
 ॥ २५ ॥ य न सु वा यि षा मे सु संग मे रु षा द नू (धा) ॥ सर्वे वा धा सु धो वा सु वे द सा  
 श्य दि नो यि वा ॥ २६ ॥ स न न मे न च्च नि नं न नो मु चो न स क टा न् ॥ म म य रा वा ॥

२१

न सिंह द्या दस्यु वो वै नि षा रु थ ॥ २७ ॥ द्वा दे व य चा य के स न न च्च नि नं म म  
 ॥ २८ ॥ यिषा वृ वा च ॥ २९ ॥ तु क्ता सा रु ग व नी रं ठि का चं ड दि कु मा ॥ ३० ॥ य ध न  
 मे व दे वा नी न दे वा न्क ने धी य ने ॥ ने यि दे वा नि न नं काः द्या धि का च ध थ यु चा  
 ॥ ३१ ॥ य रु रा ग रु ज स र्वे च कु र्वा नि रु ता च यः ॥ दै ता ष्ट दे वा नि रु ने शु रे  
 दि व चि यै यु वि ॥ ३२ ॥ ज न दि धी मि न रु मि न हो ये गु ला वि रु मे ॥ नि शु रे च म



महावीर्योऽष्टायाः याज्ञान्तमाययु ॥ ३१ ॥ एवं रुग्णवर्णी देवी सा निहायि युन  
युनं ॥ संहृय कुचूने हृय ऊगगः यत्रिया लनं ॥ ३२ ॥ नयेन भौहने विष्ते सै  
वविष्ते प्रयने ॥ माया चित्ता व विह्वानं मुह्ये विद्विय यच्छनि ॥ ३३ ॥ व्याकृतः  
येन सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वरं ॥ महा काल्या महा काले महा मात्री स्व  
यया ॥ ३४ ॥ सैव काले महा मात्री सैव सृष्टी रवेत्यजा ॥ किर्तिकचो निरुणा

नां सैव काले सनातनी ॥ ३५ ॥ रुक् काले नृधामं सैव तल्लक्ष्मी वृद्धिप्रदाश्रुते ॥ सैव रुक्  
वेन तथालक्ष्मी विनाशायोजायते ॥ ३६ ॥ सुनामं यजिनायुषे धूय गंधो रिकुसुमा  
॥ दद्यान्नि विरुं युगांश्च सनिधर्मो न तथा दुर्गा ॥ ३७ ॥ इति श्रीमाकल्युपाध्याय  
सूर्यसावर्णि के मन्त्रक ने देवी माहात्म्ये देवी वार्क नाम द्वादश अध्यायः ॥  
॥ ३८ ॥ अविप्रवाच ॥ एक नरे कथितं राज्ञे देवी माहात्म्यं मुकुतां ॥ प्रवक्ष्यामि ॥



वासादेवी यत्र दंष्ट्रा शोभते जगत् ॥ १ ॥ विद्या नथैव क्रियते रुगवद्विष्णु मा  
 यया ॥ नया त्वमेव वैष्णव नथैव नो विवेकिनः ॥ २ ॥ मोह्यन्ते मोहिता स्थेव  
 मोहमेवांति यायते ॥ नासु यैहि महापातु क्षयार्थं यत्र मेधेयी ॥ ३ ॥ आवा  
 धिता सैव नृणां शो गस्वर्गा यगैव गेदां ॥ मार्क १ (६) उवाच ॥ ४ ॥ नित्यं वच  
 ः श्रुत्वा सुवचः स न चाधियः ॥ ४ ॥ यदियत्तम हारगं गमृषिं संशिनवः ॥

२३

मं ॥ संच वैष्णवं महासुने ॥ निर्विनादि ममत्वेन आ यत्त (६) न च ॥ ५ ॥ जग  
 ममद्यत्तयमे संच वैष्णवं महासुने ॥ संच नो यै संवाया नदीयुलिनसंस्थि  
 नः ॥ ६ ॥ संच वैष्णवं यमे ये देवी मूकं यत्रं जयन् ॥ नो नस्मिन्नुलिनदेव्याः क  
 त्वा मूर्तिं मही मयी ॥ ७ ॥ ऊर्हं च कुरु स्मः युष्मधूयाग्निनयोः ॥ निवा  
 हो यै गारा नो नमनस्को समाहि नो ॥ ८ ॥ ददतु सो वलितैव निजगात्रा ॥



सुशुक्रिण ॥ अवंसमावाधय ॥ १० ॥ लिखेवैश्यादात्मनाः ॥ ११ ॥ यनिनुष्टुजगदा  
जीयस्य कंयाह वंठिकां ॥ देवुवाच ॥ यथार्थं नेतव्या रूय तवया च कुलनच  
न ॥ १० ॥ मरुसुत्थार्थं नाहूय यनिनुष्टु ददामि ते ॥ मार्कं धेयडवाच ॥ नतो २४  
ववेनृयोनाह मविप्रस्य नाऊ नमनि ॥ ११ ॥ अथैवयनि ऊं वा ऊं रुनः वृवलं  
वल्लान् ॥ सायिवैधमनोहानं ववेति विप्रमानस ॥ १२ ॥ ममेत्यहमिति प्राह

ः संगविशुक्ति कावकं ॥ देवुवाच ॥ स्वलो न हो रि नृयमे स्वं वा ऊं या प्राप्ते  
रुवान् ॥ १३ ॥ रुत्वाचियुन स्वति नं मरुदह रुतिश्रुति ॥ मृगश्च हूयः सयाथ  
ऊमदेवाचिदम्बनं ॥ १४ ॥ सावर्धिका मनु ॥ रुत्वाचियुन विद्यामि ॥ वैध  
धवश्ये तवया यश्च नो मरुहो रि वाहिनः ॥ १५ ॥ नय च छा मिसी सिधे नवहू  
नं रुतिश्रुति मार्कं धेयडवाच ॥ १६ ॥ निदर्वनं च विप्रस्य ॥ रुत्वाचियुन विद्यामि ॥ वैध







॥ म हो द नी मु क के णी घो य पू या म हा व ला ॥ अ च्यु ना रु द ज्ञान का चो ग रु ॥  
 ला णी व यि या ॥ ॐ द्रा णी ॐ द्रु मा ना च ॐ द्रु णी कि य ना य णी ॥ ॐ ॥ शिव द  
 नी क ना ली च मृ तु शु च य न मे ष्य नी ॥ वा या णी ना व सिं ही च श्री मा रै व व ना दि नी ॥ २५  
 ॥ ७ ॥ धृ नि स्म नि धृ नि मे धा वि द्या ल श्री स न स्व नी ॥ अन ना वि ऊ या यु षा ॥  
 मान सो का य ना जि ना ॥ ८ ॥ रु वा नी या र्हे नी दु ग्गो है स व र्य का णि वा ॥ ए ने नो  
 वि

म य दै दि वौ रु ना ण के णी म ना ॥ ९ ॥ श न मा व रु य द्य रु मु च्य ने वा धि वं ॥  
 ध ना न ॥ आ व रु ये स रु च्य रु चं चि नं त रु ने रु तं ॥ १० ॥ ॐ ना द्या श्री सो ण  
 स र्गो मो र्क ॥ ११ ॥ ॐ ॥ वा जो ना चा रु ग व न रु वा ना ना ने चं ठि का या स्त  
 यो दि ना ॥ ए ने या य वं रु नि ॥ या धा नं द रु न रु सि ॥ १२ ॥ आ ना धा ज  
 ना या दे या ॥ स्व र्य ये न ना दे ॥ वि धि ना ॥ रु नं व हि य था व न यु षा न रु



मे॥ १॥ युनवेहिमहाबाज यदक्रामिनवाग्रनः॥ यच्चपूर्वमयादेव्याः य  
 नममूढमेव य॥ ३॥ सर्वेद्यामहालक्ष्मी श्रीगुह्यसकलेश्वरी॥ लक्ष्मी  
 लक्ष्म्येव्यासायायकृत्स्नव्यवस्थित॥ ४॥ अधिपूजा॥ ॐ दं न ह स्यं २१  
 यनमं मनोऽयं यचक्रने॥ ५॥ लोकीनितमेकिचिन् न व वाच्यं न नाधिय  
 ॥ ६॥ सातुलिंगं गदां खेटं याधया वा विष्णुनी॥ नागं लिंगं च योनिं च विष्णुनी

धि

नृपमूढनि॥ ७॥ नयकांचनक्षोरा नयकाश्चनरुषध॥ धूनां क्षाक्षक  
 लंलात्वा युवयामासनेजसा॥ ८॥ धूनां नदखिलं लोके विलोकाय न मेष्ट  
 यो॥ दधाय त्रयकवचं नयसा देहलेनहि॥ ९॥ नागं लिंगं च योनिं काक्षं दं  
 द्वाकृत्स्नवचनन॥ विष्णुलं नानावी वरुणननुमद्यमा॥ १०॥ स्वप्नया  
 वृद्धिः खेटं च लं कृत्स्नचक्रुजं॥ कदंभाक्षायिनी न नादिनाक्षारिणि ननु







या मिथुनेस्वानुचयः ॥ १८ ॥ ३३ ॥ एत्का सामलालश्रीः समर्कमिथुनं स्व  
 य ॥ हिचधमर्कश्रीः श्रीयुसौ कमलाननौ ॥ १९ ॥ ३४ ॥ वक्रनविधिविधि  
 चमिधनपित्याहर्ननय ॥ श्रीः यदी कमलैल श्रीः स्नाहमार्गजगामि ॥ २० ॥  
 महाकालीशचनीच ॥ मिथुनेरुगुगुः स्वयं ॥ तयोचयिचय्याधिनामानि  
 चवदामिने ॥ २१ ॥ नीलकण्ठकबाहुं धर्मांगसन्ध्यायच ॥ २२ ॥ यामाध

२२

श्री

लीप्या महध्वनः ॥ २० ॥ महालक्ष्मी महावाज्जगत्तदेसदेध्वरी ॥ निचा  
 कावाचसाकावासेवनानाखिधानरुग ॥ २१ ॥ तामाकयेनिचूयैवा नैमान  
 न्यस्य कस्यचिद् ॥ २२ ॥ गंगाकैधुयवात्मस्योसावधिकेनचनन्देदेदी  
 साहस्यमूर्तिनहसोयका ॥ निरकनानयधसो ॥ २३ ॥ ॥ अवित्रवाच  
 ॥ विगुहमनसो ॥ श्रीसावित्रीसाविधिकादिता ॥ सासर्वोर्विककादुर्गो ॥



रमवर्णि ३॥ योगनिद्राद्वैरेवासाहा कालीनमे गुहा ॥ मधु केट  
२॥ ३॥ यः सुखं दुःखं ॥ २॥ दशवक्रा दशकुला दशायुर्जनय  
॥ ३॥ विष्णुलया चाजमाना विष्णु ॥ ३॥ १०१  
सा रेवाद्यादि ॥ ३॥ यः सुखं दुःखं ॥ २॥ दशवक्रा दशकुला दशायुर्जनय  
॥ ३॥ विष्णुलया चाजमाना विष्णु ॥ ३॥ १०१  
विष्णुलया चाजमाना विष्णु ॥ ३॥ १०१

पुष्पिपंदली ॥ ३॥ यथा सा वैष्णवी साया महा काली दुलहाया ॥ आ वाधिः  
सा वशी कुशो नृपुजा कर्तुं धनं च ॥ ४॥ सर्वदेवधारी त्रैलोक्यं या विरूपाक्षि  
मयरा ॥ विगुहा सा महा लक्ष्मी सा आ नमस्वि मदिनी ॥ ५॥ श्वेताननानी  
लपुजा मुखेन स नमं गुला ॥ चक्र मध्या चक्र यादा नं नीलजं घातू नमदा ॥  
॥ ६॥ मुचिपुत्र दानाधिप मा ल्यां वच विरूपाक्ष ॥ विष्णु लयेना काकि ॥



क

यमौराग्यासालिनी॥१॥ अष्टदहजुजापूजासासदसुजुजासनी॥  
युधान्ववश्चकेदशिक्षधःकनमान॥१॥ अक्रमात्तावासिकमर्तवाध  
सिकुलिर्गदी॥ चक्रविधूलयनधुःशर्वोद्यंटाचयाधकः॥१॥ धाकि  
देधुश्चमोचायंयाधयावकर्मठलु॥ अनकयुजातेरिवाचायुधैःकमला  
रुर्न॥१॥ सर्वदेवमीमीमीमीमहालक्ष्मीमिर्मानृय॥ पूजयेत्सर्वदेवानां॥

१०२

क

सलोकानां प्रभुवेन॥१॥ गोपीदेहात्समुत्पन्नायासत्वेकगुधाधिनां॥ सा  
क्रान्तसयस्वगीयोकाधुंराधुननिवह्रीधी॥१॥ दधौचाष्टजुजावाधः  
मुधलेधूलचक्ररुन॥ शर्वोद्यंटांलांगलंचकाम्कंचसुधाधिय॥१॥  
धवासंयुजिगारुकासर्वरुत्वययच्छमि॥ निधुंरुमधनीदेवीधुंरासुच।नः  
निवह्री॥१॥ धुंराकानिस्वयूयाधीमूलीनांगवयार्थिव॥ डयासर्नजनं॥



जगत्मातुः पृथगात्मानिमया ॥ ११ ॥ महान् श्रीशंकराचार्य महाकौलीस  
च स्वामी ॥ दक्षिणोऽक्षरः योऽयं यच्छेदो मिथुनग्रहं ॥ १२ ॥ विविचिः स्व  
यामाधवा मेवास्यादक्षानामा ॥ वामे लक्ष्मीदेवी देवताय  
यं ॥ १३ ॥ अष्टादश रुद्रा मधवा मेवास्यादक्षानामा ॥ दक्षिणोऽक्षरः रुद्रा  
लक्ष्मीर्माहर्षिनी समर्थते ॥ १४ ॥ पूर्वोदितलग्नः पूजा सिर्गागाद्यष्टै

१०३

मेवैवेन्नाना रुद्रा समन्विताः ॥ अधिने केन वलिना मांसेन सुप्रयानृप ॥  
॥ १५ ॥ यक्षमात्रमनीयेन चन्दनेन मुर्गाधिना ॥ सकृद्यैश्च नां वृत्ते रिकि  
राव समन्विता ॥ १६ ॥ सर्वोऽष्टमात्रः पूजा वृद्धाद्या शायथाक्रम ॥ वाम  
लाग्येनोदेवाश्चिन्तनीयं महासुखं ॥ १७ ॥ पूजयेत्माह्वयेन प्राकंसा  
योऽस्मीक्षया ॥ दक्षिणोऽयुननः सिंहं समग्रं धर्ममीध्वजं ॥ १८ ॥ वारुनं पू



ऊयेदेवा धृतयेन चत्राचवं ॥ गमः कृ मां जलिः युद्धः सुवीन चत्रि नैविमेः  
 ॥ ३३ ॥ प्रकेन वामधमेन नै केनेन चत्रि ह ॥ (॥ का र्द्ध (॥ क यादं वाः  
 (॥ कं वानृय सरुमः ॥ ३४ ॥ चत्रि मा र्द्ध गुन ऊये ऊये छिद्र सवा प्रयाग १०५  
 ॥ सो गमं गै सुवीनेऽं यदि वा ऊ गदं वि कां ॥ ३५ ॥ यद क्रिष्णं नमस्का वं  
 कृत्वामूर्द्धि कृ मां जलिः ॥ क्रमायये ऊ गदा गौ मुद्रु मुद्रु चर्म द्रुग ॥ ३६ ॥

आशा नरकस्थि

ASHA ARCHIVES

2196

I